

नाम            बेटा हिन्द का    लदाख में

विषय            नाटक

लेखक            राम उजागर दुबे

प्रकाशक        साकेत साहित्य सदन  
६२, हेलनबासिमा मार्केट, हुजूरत गंज, लखनऊ

मूल्य            रु. ३.००

पृष्ठ संख्या     १२७

आकार            २० X ३० X १६

पैपर            |            २८ पीछे  
व्हाइट प्रिन्टिंग |

.....

बेटा हिन्द का-

लद्दाख में

डा० धीरेन्द्र वर्मा पुस्तक-समूह

लेखक

श्री राम उजागर दुबे

बी० ए०, साहित्यरत्न

---

साकेत साहित्य सदन

प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेता

६२, हलवासिया मार्केट,

हजरतगंज, लखनऊ

प्रकाशक :—

शिव शंकर दुबे  
साकेत साहित्य सदन,  
६२, हलवासिया मार्केट,  
हजरतगंज, लखनऊ

चित्रकार :—

श्री जमील अख्तर

मूल्य : तीन रुपये

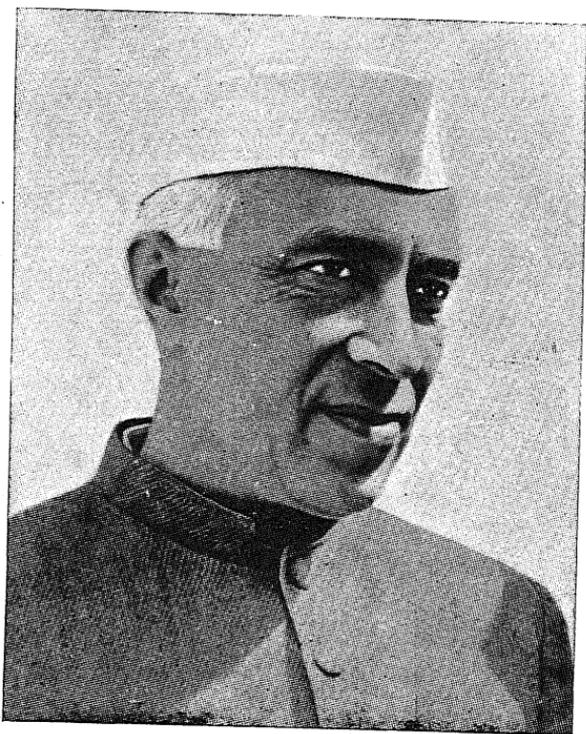
संस्करण : २००० प्रतियां

मुद्रक :—

दुर्गा प्रेस, लखनऊ

महान् कर्मयोगी

पं० जवाहरलाल नेहरू



माता स्वरूपरानी नेहरू  
की आशालता का विकसित सुमन

गांधी युग के महापुरुष

भारत के राष्ट्रनायक

मानवता के महानतम पुजारी

एवं

सत्यं शिवं सुन्दरम् के साक्षात् स्वरूप

पं० जवाहरलाल नेहरू

की

स्मृति में

## नेहरू जी की वसीयत

अपने खून और पसीने से करीब आधी सदी तक राष्ट्र की सेवा करने वाले शान्तिदूत और मानवीय संस्कृति के महान उपासक जननायक नेहरू की अन्तिम इच्छा यह थी कि मृत्यु होजाने के बाद उनका दाहसंस्कार कर दिया जाय और अस्थियों का कुछ हिस्सा गंगा नदी में डाल दिया जाय जो जनता की प्रिय नदी है और जिससे चिपटी हुई हैं भारत की जातीय स्मृतियां, उसकी आशाएं और उसके भय, उसके विजय गान, उसकी विजय और पराजय । उनकी भस्म की एक मुठ्ठी इलाहाबाद के पास गंगा में डाल दी जाय जिससे वह उस महासागर में पहुंचे जो हिन्दुस्तान को घेरे हुए है ।

राष्ट्रनायक नेहरू ने अन्त में कहा कि, “मेरी भस्म का शेष भाग हवाई जहाज से ऊंचाई पर ले जाकर बिखेर दिया जाय उन खेतों पर जहां भारत के किसान मेहनत करते हैं ताकि वह भारत की मिट्टी में मिल जाय और उसी का अंश बन जाय ।”

२१ जून, १९५४में लिखी विश्वविभूति जवाहरलाल नेहरू की वसीयत के कुछ अंश निम्नलिखित हैं—

“मुझे मेरे देश की जनता ने, मेरे हिन्दुस्तानी भाइयों और बहनों ने इतना प्रेम और इतनी मुहब्बत दी है कि चाहे मैं जितना कुछ करूँ, वह उसके एक छोटे हिस्से का बदला नहीं

हो सकता । सच तो यह है कि प्रेम इतनी कीमती चीज है कि इसके बदले कुछ देना मुमकिन नहीं है । इस दुनिया में बहुत से लोग हुए जिनको अच्छा समझ कर, बड़ा मानकर, उनका आदर किया गया, पूजा गया—लेकिन भारत के लोगों ने छोटे और बड़े, अमीर और गरीब, सब तबकों और बहनों और भाइयों ने मुझे इतना प्यार किया कि जिसका बयान करना मेरे लिए मुश्किल है और इससे मैं दब गया । मैं आशा करता हूँ कि मैं अपने जीवन के बाकी वर्षों में अपने देशवासियों की सेवा करता रहूँ और उसके प्रेम योग्य होऊँ ।

“बेशुमार दोस्तों और साथियोंके मेरे ऊपर और भी ज्यादा अहसान हैं । हम बड़े कामों में एक-दूसरे के साथ रहे, शरीक रहे, मिलजुल कर किये । यह तो होता ही है कि जब बड़े काम किये जाते हैं उनमें सफलता भी होती है, नाकामयाबी भी होती है । मगर हम शरीक रहे सफलता की खुशी में और नाकामयाबी के दुःख में भी”

“मैं चाहता हूँ और मन से चाहता हूँ कि मेरे मरने के बाद कोई धार्मिक रस्में न अदा की जायँ । मैं ऐसी बातों को मानता नहीं हूँ और सिर्फ रस्म समझ कर इनमें बंध जाना धोखे में पड़ना मानता हूँ । जब मैं मर जाऊँ तो मेरी इच्छा है कि मेरा दाह-संस्कार कर दिया जाय । अगर विदेश में मरूँ, तो मेरे शरीर को वही जला दिया जाय, और मेरी अस्थियाँ इलाहाबाद भेज दी जायँ । इनमें से मुट्ठी भर गंगा में डाल दी जाय, और उनके बड़े हिस्से के साथ क्या किया जाय, मैं आगे बता रहा हूँ । इनका कुछ भी हिस्सा किसी भी हालत में बचा कर न रक्खा जाय ।”

“गंगा में अस्थियों का कुछ हिस्सा डलवाने की इच्छा के पीछे जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, कोई धार्मिक ख्याल नहीं है । इस बारे में मेरी कोई धार्मिक भावना नहीं है । मुझे बचपन से गंगा और यमुना से लगाव रहा, और जैसे जैसे बड़ा हुआ, यह लगाव बढ़ता रहा । मैंने मौसमों के बदलने के साथ इनके बदलते हुए रंग और रूप को देखा, और कई बातें मुझे याद आई उस इतिहास की, उन परम्पराओं की, पौराणिक गाथाओं की, उन गीतों और उन कहानियों की जो कि युगों से उनके साथ जुड़ गयी हैं और उनके बहते हुए पानी में घुल-मिल गई हैं ।”

“गंगा तो विशेषकर भारत की नदी है, यह जनता को प्रिय है, जिससे लिपटी हुई हैं भारत की जातीय स्मृतियां, उसकी आशाएं और उसके भय, उसके विजयगान, उसकी विजय और पराजय । गंगा तो भारत की प्राचीन सभ्यताकी प्रतीक रही है, सदा बदलती, सदा बहती फिर वही गंगा की गंगा । वह मुझे याद दिलाती है हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों की और गहरी घाटियों की, जिनसे मुझे मुहब्बत रही है, और उनसे नीचे के उपजाऊ और दूर दूर तक फैले मैदान जहां काम करते मेरी जिन्दगी गुजरी है । मैंने सुबह की रोशनी में गंगा को मुस्कराते, उछलते-कूदते देखा है, और देखा है शाम के साये में उदास, काली सी चादर ओढ़े हुए, भेद भरी जाड़ों में सिमटी सी आहिस्ते-आहिस्ते बहती सुन्दर धारा, और बरसात में वह दहाड़ती, गरजती हुई, समुद्र की तरह चौड़ा सीना लिये और सागर को बरबाद करने की शक्ति लिये हुए यही गंगा मेरे लिए निशानी है भारत की प्राचीनता की, यादगार की,

जो बहती आयी है वर्तमान तक और बहती चली जा रही है भविष्य के महासागर की ओर । भले ही मैंने अपनी परम्पराओं, रीतियों और रस्मों को छोड़ दिया हो, और मैं चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान इन जंजीरों को तोड़ दे जिनमें वह जकड़ा है जो उसको आगे बढ़ने से रोकती हैं और जो देश में फूट डालती है, जो बेशुमार लोगों को दबाये रहती हैं और शरीर और आत्मा के विकास को रोकती हैं । चाहे यह सब मैं चाहता हूँ, फिर भी मैं यह सब नहीं चाहता कि अपने को इनकी पुरानी बातों से बिल्कुल अलग कर दूँ । मुझे फ़ख़ है कि इस शानदार उत्तराधिकार का, इस विरासत का जो हमारी रही है और हमारी है, और मुझे यह भी अच्छी तरह से मालूम है कि मैं भी, हम सभी की तरह, इस जंजीर की एक कड़ी हूँ जो कि कभी नहीं और कहीं नहीं टूटी है और जिसका सिलसिला हिन्दुस्तान के अतीत इतिहास के प्रारंभ से चला आ रहा है । यह सिलसिला मैं कभी नहीं तोड़ सकता, क्योंकि उसकी बेहद कद्र करता हूँ, और इससे मुझे प्रेरणा, हिम्मत और हौसला मिलता है । मेरी इस अकांक्षा की पुष्टि के लिये, मैं यह दरखास्त करता हूँ कि मेरी भस्म की एक मुट्ठी इलाहाबाद के पास गंगा में डाल दी जाय जिससे कि वह उस महासागर में पहुँचे जो हिन्दुस्तान को घेरे हुए है ।”

मेरी भस्म के बाकी हिस्सेका क्या किया जाय । मैं चाहता हूँ कि इसे हवाई जहाज में ऊँचाई पर ले जाकर बिखेर दिया जाय उन खेतों पर जहाँ भारत के किसान मेहनत करते हैं, । ताकि वह भारत की मिट्टी में मिल जाय और उसी का अंग बन जाय ।

## मूर्धन्य साहित्यकारों की सम्मितियाँ

श्री राम उजागर दुबे, बी० ए०, साहित्यरत्न, ग्रामवासी हिन्दी भाषी समाज के सुपरिचित लेखक हैं। स्काउट दल, आकाशवाणी के पंचायत घर और सूचना विभाग के सांस्कृतिक प्रोग्रामों के सूत्रधार रह चुकने के कारण उन्होंने हमारे देहाती समाज की नैतिक, सांस्कृतिक शक्तियों तथा दुर्बलताओं का अच्छा अध्ययन किया है। अपनी हर रचना में दुबे जी एक ऐसी समस्या उठाते हैं जो हमारी जनता के लिये तात्कालिक महत्व की होती है।

प्रस्तुत रचना में उन्होंने यह दिखलाया है कि भारतवासी मुसलमान भी अपने देश पर न्योछावर होने के लिये उसी तरह तत्पर रहता है जिस तरह कि हिन्दू। इस भावना का निरूपण करने के साथ ही साथ उन्होंने कथानक में एक नाटकीय घटना का समावेश किया है जो इस नाटक की खूबसूरती बढ़ा देती है।

भाषा अच्छी है, सम्वादों में सहजता है; नाटक देखने वाला अपने घर लौट कर नाटक की कहानी सिलसिलेवार बिना किसी उलझाव के सुना सकता है। ये विशेषताएँ ही नाटक की सफलता की गारण्टी हैं।

—अमृतलाल नागर

चौक, लखनऊ-३

“बेटा हिन्दू का—लहाख में” नामक नाटक को मैंने आद्योपान्त पढ़ा । नाटक अत्यन्त रोचक, राष्ट्रीय भावनोंत्पादक एवं नयी चेतना से ओत-प्रोत है ।

जिस उद्देश्य की पूर्ति हेतु इस नाटक की रचना हुई है वह स्तुत्य है । यदि इस नाटक के मूल तत्व को प्रत्येक भारतीय नवयुवक को हृदयंगम कराया जा सके तो हमारे देश की एक बहुत बड़ी समस्या हल हो सकेगी ।

किसी विशेष वर्ग का यह गुमान है कि वही वर्ग देश का हितैषी है तो इस नाटक के अध्ययन के पश्चात् ऐसे वर्ग के लोगों की धारणा निर्मूल सिद्ध होगी ।

नाटक का विषय उद्देश्य पूर्ण एवं सार्थक है । देश की भयावह परिस्थिति में यह नाटक नवयुवकों में अवश्य राष्ट्रीयता का बीजारोपण करेगा ।

नाटक का नायक कर्नल इनायत खाँ अपने पूर्वजों की रूढ़िवादिता को अपने चरित्र बल के सहारे बड़ी बुद्धिमत्ता से दूर करता है और परिवार के प्राणियों में देश प्रेम की नयी ज्योति जगाता है । नायक का राष्ट्र हित में बलिदान अनुकरणीय है ।

देश की सामयिक समस्या पर नाटक प्रस्तुत कर श्री दुबे ने सराहनीय कार्य किया है, एतदर्थ वह बधाई के पात्र हैं ।

—कल्याण सिंह

निदेशक,  
राष्ट्रीय नाट्य परिषद्,  
लखनऊ

उत्तर प्रदेश

श्री राम उजागर दुबे की गिनती अच्छे कलाकारों में है। उत्तर प्रदेश के सूचना विभाग द्वारा खेले जाने वाले जिन अभिनयों को उनका निर्देशन प्राप्त हो जाता है, उनमें निश्चय ही चार चाँद लग जाते हैं। मैंने उनका, "बेटा हिन्द का—लहाख में" नाटक देखा, बल्कि देखा ही नहीं बहुत ध्यान—पूर्वक आद्योपान्त पढ़ गया।

नाटक अत्यन्त रोचक और शिक्षाप्रद है। इन दोनों गुणों की दृष्टि से इस नाटक का अधिकाधिक प्रचार हो सकता है, विशेषकर प्रामाण क्षेत्रों में, जहाँ इन गुणों की प्रधानता मिलनी ही चाहिए।

—गोपाल चन्द्र सिंह

अवकाश प्राप्त डि०जज

महामंत्री—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

सचिव —हिन्दी कोश समिति

मन्त्री —अखिल भारतीय संस्कृत परिषद्, लखनऊ

मैं श्री राम उजागर दुबे को हार्दिक बधाई देता हूँ कि उन्होंने "बेटा हिन्द का—लहाख में" नामक नैतिक भावनाओं से परिपूर्ण एक सफल नाटक लिखा है। ऐसी पुस्तकों की देश में बड़ी आवश्यकता है जिससे देश भक्ति की जागृति होती है।

हमारे नवयुवकों के लिए यह नाटक बड़ा शिक्षाप्रद है।

—विद्याधर जयाल

ब्रिगेडियर

## लेखक का परिचय

श्री राम उजागर दुबे का जन्म १३ जुलाई, सन् १९०८ को सरयूपारीण ब्राह्मण परिवार में हुआ। आपके पिता पं० रामकृष्ण दुबे, ग्राम गानेपुर, पोस्ट मालीपुर, जिला फैजाबाद के निवासी थे। श्री दुबे की शिक्षा बी०एन० हाई स्कूल, अकबरपुर, गवर्नमेण्ट इण्टर कालिज, फैजाबाद एवं विश्वविद्यालय, लखनऊ में हुई। आप लखनऊ विश्वविद्यालय के ग्रेजुएट तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के साहित्यरत्न हैं। श्री दुबे सन् १९३२ से १९३५ तक हिन्दुस्तानी ऐकेडमी, प्रयाग एवं इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद में साहित्यिक कार्यों में सहायता देते रहे।

सन् १९३५ से १९४० तक आप स्काउट हेड क्वार्टर इलाहाबाद के प्रमुख कार्यकर्त्ता रहे। पं० श्रीराम बाजपेयी, चीफ आर्गनाइजिंग कमिश्नर एवं डा० हृदय नाथ कुंजरू, चीफ कमिश्नर की छत्रछाया में इन्होंने सेवा-कार्य एवं साहित्य-सेवा का पाठ हृदयंगम किया। इस क्षेत्र में इनका कृतित्व सराहनीय रहा। प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर के पद पर इनकी नियुक्ति हुई।

सन् १९४१ से १९४३ तक आप फैजाबाद जिले में ग्राम सुधार विभाग में जिला इन्स्पेक्टर थे। इस दिशा में इनकी जन कल्याणकारी योजनाएँ अत्यन्त सफल रहीं। सन् १९४४ से १९४६ तक आप आकाशवाणी, लखनऊ में सहायक सुपरवाइजर एवं सन् १९४६ से १९५० तक सुपरवाइजर रूरल ब्राडकास्ट रहे।

सन् १९५० से १९६२ तक आपने 'पंचायत घर' और 'मजदूर मण्डल' कार्यक्रमों के व्यवस्थापक के पद पर कार्य किया। इनके समय में दोनों प्रोग्राम अत्यन्त सफल रहे।

सन् १९६२ से १९६५ तक आपने सूचना विभाग में देहाती रेडियो-गोष्ठी, ड्रामा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सक्रिय सहयोग दिया। इन्हीं दिनों आपको नेफा क्षेत्र की सीमा पर कलाकारों की एक टुकड़ी लेकर

जाना पड़ा था। वहाँ जितने सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए वे बड़े सफल रहे। इनकी देख-रेख में कश्मीर-कलाकारों के दल ने बस्ती जिले में १० कार्यक्रम किए जिन्हें जनता ने बहुत सराहा और कश्मीर प्रदेश की सभ्यता, संगीत तथा नृत्य का ज्ञान प्राप्त किया।

आजकल आप आकाशवाणी, लखनऊ में सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश की ओर से प्रचार का कार्य संभाल रहे हैं। इनकी कार्य-कुशलता एवं लगन से प्रभावित होकर उत्तर प्रदेश सरकार ने इनकी सेवा अवधि और बढ़ा दी है। इस समय आपकी अवस्था ५६ वर्ष है।

आपके लेख, कहानी, नाटक, फीचर और प्रहसन आदि सन् १९३८ से विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। आपका नाटक “करमू प्रधान” उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत भी हो चुका है। आपके अन्य प्रकाशित नाटकों—“घरमू सरपंच”, “सुर्जन सिंह इण्टर क्लास में” तथा “पुरखों की थाती”, की हिन्दी साहित्य के प्रमुख विद्वानों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

आकाशवाणी के सेवा-काल में आपके द्वारा आयोजित रंगमंच के अभिनय, नाटक एवं प्रहसन, लोकोत्सव तथा श्रमिकोत्सव अत्यन्त जन-प्रिय रहे। ये कार्यक्रम स्टेशन डाइरेक्टर और डाइरेक्टर जनरल, आकाशवाणी द्वारा सराहे गये।

आपकी सभी ग्रामोपयोगी पुस्तकें विकास आयुक्त एवं निदेशक-पंचायत-राज से स्वीकृत हैं। अब तक आपके पांच नाटक प्रकाशित हो चुके हैं।

आशा है, निकट भविष्य में इनकी लेखनी से निस्सृत साहित्य जन-जागृति में नयी चेतना एवं भावनात्मक एकता में आशातीत वृद्धि करेगा।

—प्रकाशक



## दो शब्द

“बेटा हिन्द का - लहाख में” नाटक का नायक कर्नल इनायत खां भारतीय संस्कृति, सभ्यता और साहित्य का सच्चा पुजारी है। वह अपनी जन-कल्याणकारी धारणा की वेगवती धारा के प्रवाह से अपने पूर्वजों की रूढ़िवादिता एवं संकुचित मान्यताओं की नींव को डिगा देता है। वह अपने विद्यार्थी जीवन में ही इन्सानियत की अहमियत, समाजवाद की गरिमा और राष्ट्रीय एकता के महत्व को हृदयङ्गम करता है तथा अपने प्रतिदिन के जीवन में इन गुणों को व्यावहारिकता की कसौटी पर कसता है। धीरे-धीरे वह समाज में तपे तपाये स्वर्ण की भाँति खरा उतरता है। उतरोतर उसका उत्साह बढ़ता है और सीमा-संघर्ष के समय राष्ट्र-सुरक्षा-संग्राम के यज्ञ में वह कूद पड़ता है।

अपने साहस, अटल विश्वास और तात्कालिक कुशाग्र-बुद्धि के आधार पर वह सेना में पदोन्नति करता है। भारतीय सीमा-सुरक्षा में वह प्राणप्रण से जुट जाता है और अकथनीय ख्याति प्राप्त करता है।

इस नाटक में उदात्त चरित्र नायक कर्नल इनायत खां की जिन्दगी का सच्चा वर्णन दिया गया है। नाटक कहाँ तक सफल हुआ है, इसके विषय में मुझे कुछ कहना नहीं है। नाटक के

पाठक, दर्शक एवं निदेशक स्वयं निर्णय करेंगे । यत्र तत्र त्रुटियों के हेतु क्षमा प्रार्थी हूँ ।

नाटक-साहित्य-सृजन में मुझे जो मार्ग दर्शन श्री अमृतलाल नागर, डा० वृन्दावन लाल वर्मा, डा० लक्ष्मी नारायण लाल एवं श्री विश्वम्भर 'मानव' जी से प्राप्त हुआ है, उसके लिए मैं उक्त साहित्य-सम्राटों का आजीवन आभारी रहूंगा ।

साहित्य-लोक में पदार्पण कराने एवं अभिरुचि उत्पन्न कराने का श्रेय पूज्य पं० भवानी भीख जी त्रिपाठी "दिव्य," श्रद्धेय श्री श्रीनारायण जी चतुर्वेदी एवं न्यायमूर्ति श्री गोपाल चन्द्र जी सिंह को है, जिनका मैं चिर ऋणी रहूंगा ।

२८-८-६६

राम उजागर दुबे

## पुरुष पात्र

- १-खान अहमद खां कपड़ा बेचने वाला और ब्याज पर रुपया देने वाला एक खान जो उत्तर-प्रदेश में कई वर्षों से अड्डा जमाये है ।
- २-बुद्धू मियां (खानसामा) खान साहेब का पुराना बावर्ची ।
- ३-इनायत खाँ (कर्नल) खान साहेब का एकलौता बेटा ।
- ४-डाकिया खान साहेब के मुहल्ले में डाक बांटने वाला पोस्टमैन ।
- ५-जुम्मन मियां, भगत चौधरी, संतराम, बख्तावर सिंह तथा दीन दयाल खान साहेब से कर्ज लेकर अपनी गृहस्थी चलाने वाले वयोवृद्ध किसान ।
- ६-हकीम साहेब खान साहेब के दोस्त जो पुराने वज्रा के हकीम हैं ।
- ७-जोरावर सिंह इनायत खाँ का सहपाठी जो यूनि-वर्सिटी में उनका सहयोगी है ।
- ८-कर्नल साहेब कर्नल इनायत की कम्पनी का कमान्डर ।

## स्त्री पात्र

- १-शाहिदा जुम्मन मियां की एकलौती बेटी ।
- २-ज़रीना खान साहेब की पत्नी ।
- ३-शमीमा जुम्मन मियां की पत्नी ।

---

---

राष्ट्रीय एकता, देशप्रेम

एवं

सैन्य संगठन के महत्व पर आधारित

एक मौलिक नाटक

---

---

# बेटा हिन्द का लदाख में !

\*

अंक १

\*

दृश्य १

\*

(खान अहमद खां अपनी चौपाल में आराम कुर्सी पर बैठे-बैठे लम्बी नैचे वाली फर्शी से आसमान पर धुएँ के लच्छे उड़ा रहे हैं। रह-रह कर मूँछों पर ताव भी देते हैं। कभी उनका हाथ बल्लम पर जाता है और कभी उनकी उंगलियां दो-नाली बन्दूक पर दौड़ती हैं। कभी-कभी दायें-बायें अपनी रोबीली निगाह दौड़ा लेते हैं। उनके चेहरे पर मस्ती और बेफिक्री का आलम छाया हुआ है। ऐसा लगता है कि मानो उनकी जवानी भूल कर उनसे जुदा हो गई थी और अब फिर उल्टे पांव वापस आ रही है। यों तो वह हैं ५२ वर्ष के, लेकिन देखने में जवानों के कान काटते हैं। उनका भरा-भरा चेहरा, बड़ी-बड़ी आँखें, लम्बी-चौड़ी पेशानी और गरदन तक फैले घुँघराले बाल अपनी-अपनी जगह पर अनोखी जीनत दिखला रहे हैं। कभी-कभी उनके गुलाबी चेहरे पर गुरुर की हल्की सी रेखा भी खिंच जाती है।)

(चौपाल में बुद्धू मियां खानसामा प्रवेश करता है)

**बुद्धू मियां:**—आदाब बजा लाता हूँ खान साहेब ! दस्तर-  
खान कहाँ लगेगा, बैठक में या यहीं चौपाल  
में ?

**खान साहेब:**—कोई हर्ज नहीं । यहीं खाना लाओ । देर हो  
रही है । हमें वसूली पर भी तो जाना है ।  
इनायत बेटा कहां है ?

**बुद्धू मियां :**—छोटे सरकार भी आ रहे हैं हुजूर ! जरा  
कपड़े बदल रहे हैं ।

(खानसामा अन्दर खाना लेने जाता है ।)

**खान साहेब :**—इनायत बेटा ! जल्दी आओ । खाना बिल्कुल  
तैयार है ।

**इनायत :**—(नैयथ्य में) अभी आया अब्बाजान ! अभी  
आया ।

**खान साहेब :**—तुम कैसा खान बेटा है जो दस्तरखान से  
खौफ खाता है । मैदाने-जंग में दुश्मनों के  
दांत कैसे खट्टे करेगा ? हम लोग तुम्हारी  
उम्र में अम्मीजान को तौबा बुला देते थे ।  
कभी-कभी उन्हें दोबारा चपातियाँ तैयार  
करनी पड़ती थी । क्यों बुद्धू मियां, मैं गलत-  
बयानी तो नहीं कर रहा हूँ ?

**बुद्धू मियां** :—वल्लाह क्या ज़माना था हुजूर ! ईंट पत्थर भी निगल लिया जाता था, तो वह भी काफूर हो जाता था । जिधर से हुजूर बंदूक लेकर निकलते थे लोग हाथ मलते थे । क्या सजीला बदन था हुजूर का ? माशा अल्लाह ! अभी भी इमारत बुलन्द दिखायी पड़ती है । यह सब खानगी पर ही मुनहसिर है सरकार !

**खान साहेब** :—बुद्धू ! वह ज़माना ही कुछ और था । अब छोड़ो उन बातों को । इनायत को आवाज दो । जल्दी खाने पर आये । अतड़ियां कुलबुला रही हैं ।

**बुद्धू मियां** :—छोटे सरकार ! तशरीफ़ लाइए ! खाना ठण्डा हो रहा है ।

**इनायत** : —अभी आया ! चन्द मिनटों में हाजिर हुआ ।

**खान साहेब** :—अभी आया । अभी आया ! कहता है । देखें कब होता है तेरा अभी और कब खत्म होते हैं तेरे चन्द मिनट । अगर अपने मुल्क में होता तो इतनी देर में न जाने क्या से क्या हो जाता ?

**बुद्धू मियां** :—क्यों नहीं हुजूर ! वहाँ कभी-कभी खाना-पीना  
हराम हो जाता था ।

**खान साहेब** :—इनायत बेटा ! सामने की पत्तल बर्दाश्त  
नहीं होती । क्यों खामोखाह इतनी देर लगा  
रहे हो ?

**बुद्धू मियां** :—आइये छोटे सरकार ! खाने का लुत्फ़ जाता  
रहेगा ।

**खान साहेब** :—बुद्धू मियां ठीक ही कह रहे हैं । ठण्डे खाने  
की लज्जत जाती रहती है ।

(बुद्धू मियां अपनी बात पर दाढ़ पाकर फूल कर गुब्बारा हुए  
जा रहे हैं ।)

**इनायत** :—(प्रवेश करते हुए) मैं आ गया अब्बा जान !

**खान साहेब** :—तुम रोज इन्तज़ार कराते हो, आखिर बात  
क्या है ?

**इनायत** :—वैसे तो कोई बात नहीं । हां, आज बुद्धू  
मियां ने नाश्ता खूब पुर्ज़ोर बनाया था ।  
इसीलिए.....

**खान साहेब** :—अच्छा यह बात है । क्या कहने हैं बुद्धू  
मियां के ? इनकी जितनी भी तारीफ़ की  
जाय कम है । इन्होंने मुझे जवानी में ऐसे-

ऐसे खाने खिलाये हैं कि मैं उन्हीं की बदौलत अभी तक.....

( बुद्धू मियां अपनी तारीफ सुनकर पानी-पानी हुए जाते हैं और तीन बार झुक कर सलाम करते हैं । )

**बुद्धू मियां:**— इस नाचीज की क्या बिसात ? यह तो आप हज़रात की ज़र्रा निवाज़ी है। ख़ाक-सार किस काबिल है ?

**खान साहेब:**— नहीं बुद्धू मियां ! तुम वाक़ई अक्वल दर्जे के बावर्ची हो। किसी की क्या मजाल जो आपके खाने में नुक्स निकाल सके ?

( बुद्धू मियां अपनी तारीफ सुनकर खुशी में झूम रहे हैं । )

**बुद्धू मियां:**— खुदा झूठ न बुलाए खान साहेब ! आपके अब्बाजान ने नवाब साहेब और गवर्नर बहादुर को दावत में मद्ऊ किया था। सारे उमरा रईस और हुक्काम दावत में शरीक थे। बड़े ऊँचे पैमाने पर दावत दी गयी थी। खाना खत्म होने पर मेरी पुकार हुई। नवाब साहेब और गवर्नर बहादुर के सामने पेश किया गया। उस वक़्त मुझ पर क्या बीती, क्यों कर बयान

करूँ ? ख़ौफ़ से सारा बदन पसीने से तर-बतर था । लेकिन वहाँ पहुँचते ही सारा खाका बदला पाया । नवाब साहेब ने तारीफ़ों की झड़ी लगा दी थी और एक दुशाला और १०१ रुपया इनाम अता किया । गवर्नर साहेब बहादुर ने एक बहुत बढ़िया सार्टीफ़िकेट देकर करम फरमाया । सारे उमरा और रईसों ने तारीफ़ के पुल बांध दिए इस नाचीज़ के बारे में । उसी वक्त आपके बुजुर्गवार वालिद साहेब ने एक बेशक्रीमती अंगूठी अपने हाथों से मुझे पिन्हायी थी ।

**इनायतः—** मगर अफ़सोस है बुद्धू मियां कि गोरी चमड़ी वाला आपको कोरी सार्टीफ़िकेट देकर चलता बना । उसे भी तो बख़शीश देनी चाहिए थी ।

**बुद्धू मियांः—** आप तो मज़ाक करते हैं छोटे सरकार ! इस ड्योढ़ी को खाने - खिलाने का बड़ा शौक़ था । वरना मुझे ये चीज़ें कहाँ मुयस्सर होतीं ? जो जैसा खायेगा वह

वैसा ही बनेगा छोटे सरकार ! ( इनायत मुस्कराता है । )

**खान साहेब:—** यही तो मैं भी कहता हूँ । अभी तो यह बड़े कालिज की खाक छान रहे हैं और जब हमारी तिजारत को सम्हालेंगे तो आटे-दाल का भाव मालूम पड़ जायगा । एड़ी-चोटी का पसीना एक करना होता है । इस फ़न में कामयाब होने के लिये काफ़ी जिस्मानी कुव्वत् भी होनी चाहिए ।

**बुद्धू मियां:—** छोटे सरकार ! खान साहेब ठीक ही फ़रमा रहे हैं । इन्हें देखते ही मकरूज किसान की हवाइयां उड़ने लगती हैं और वह दस रुपये की जगह बीस लेकर क़दमों में सिर टेकता है ।

**खान साहेब:—** ठीक ही कहते हैं बुद्धू मियां, बेटा ! मेरी सूरत देखते ही कर्ज़दार की रूह फना कर जाती है । चेहरे पीले पड़ जाते हैं । उसे चक्कर आने लगता है ।

**बुद्धू मियां:—** क्यों न हो ऐसा सरकार ! हुज़ूर अपनी जवानी के शबाब में पिस्ता, अख़रोट, अंगूर,

सेब, बादाम, चिलगोज़ा, छुहारे और मुनक्के हर वक्त खाते रहते थे। आए दिन मुर्गा मुसल्लम, आमलेट, पुलाव और कबाब तैयार किए जाते थे। दूध-मक्खन, बालाई और घी भी इफ़रात से इस्तेमाल किए जाते थे।

( इनायत खां बुद्धू मियां की बातें बड़े गौर से सुनते हैं। उनके चेहरे पर हल्की मुस्कान दौड़ जाती है और खानसामा फूला नहीं समाता। )

**खान साहेब:**— इनायत बेटा ! सच बात तो यह है कि इसमें बुद्धू मियां का बहुत बड़ा हाथ रहा है। जिस जां-फ़िशानी और ईमानदारी से इन्होंने अपने ५० साल इस ड्योढ़ी में काटे हैं, वह अपने ढंग की एक ही मिसाल है। आज - कल के नौकर-चाकर अपना ईमान घर पर रख आते हैं और फिर मुलाज्जमत करने आते हैं। मैं बुद्धू मियां का बहुत बड़ा एहसान मानता हूँ।

( बुद्धू मियां बहुत आजिजी के साथ शुक्रिया अदा करते हैं और तीन बार झुक कर सलाम करते हैं। इनायत खां भी

दाद देने की मुद्रा में। हाथ धुलवाते समय बड़ी तहजीब और करीने से बुद्धू मियां पेश आते हैं। इनायत खां के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान थिरकती दिखायी पड़ती है। वह बुद्धू मियां में खास दिलचस्पी जाहिर करता हुआ अन्दर चला जाता है। खान साहेब और बुद्धू मियां एक दूसरे की तारीफ़ करके पूरी आसूदगी हासिल करते हैं। बुद्धू मियां नक्काशीदार फ़रशी तैयार करके पेश करते हैं। लेकिन खान साहेब खाना खाने के बाद शीशे में चेहरा देख कर मूंछों में रोगन लगाते हैं। बुद्धू मियां शरारत भरी निगाह से खान को देखते हैं और शोख इशारा करते हैं। )

**बुद्धू मियां:**— खान साहेब ! गुस्ताखी माफ़ हो। तम्बाकू में ताव आ गया है। मेहरबानी करके शौक कीजिए। लुत्फ़ आ जायगा इस वक़्त। चौपाल मुअत्तर हो जायेगी खुशबू से।

**खान साहेब:**— क्या कहने हैं बुद्धू मियाँ ! तुम तो मेरे दिल की बात जान लेते हो। अब जरूरत महसूस ही हो रही थी कि हुक्का हाजिर कर दिया आपने। बहुत अच्छा। शुक्रिया, लाइये।

( खान साहेब बड़ी शान से मसनद पर टेक लगा लेते हैं और एक लम्बा कश छोड़ते हैं। धुवां कई फीट ऊपर गुड़ली मारता उठता है और मंडराता रहता है। खान साहेब बुद्धू मियां को एहसान भरी निगाह से देखते हैं और वह एहसान से दबा जा रहा है। )

**खान साहेब:—** सुभान अल्लाह ! क्या खुशबूदार तम्बाकू है ? तबीयत बाग - बाग हो गयी ( एक जोर का कश छोड़ते हैं जिससे खान साहेब का चेहरा तमतमा उठता है ओर वे दो-तीन बार खांसते भी हैं ) वाह बुद्धू मियां ! क्या ताव आया है इस तम्बाकू में ? तुम वाकई लाज-वाब आदमी हो । किसी क्रीमत पर भी तुम जैसा फरमाबरदार खानसामा नहीं मिल सकता । जनाब में सूरत भी है और सीरत भी । जवानी में न जाने कितने घर उजाड़ दिए होंगे ?

( बुद्धू मियां उस तारीफ़ पर कई बल खाते हैं । लजीली निगाहों से खान साहेब की ओर देखते हैं और झुक कर सलाम करते हैं । सिर्फ़ हुजूर ! हुजूर ! कह कर चुप रह जाते हैं । )

**खान साहेब:—** ठीक ही कहता हूँ, बुद्धू मियां ! कहाँ तक तारीफ़ की जाय आपकी ? अच्छा ! अब आप भी खाना खा लीजिए और हाँ, इनायत बेटा को ज़रा इधर भेज दीजिए ।

**बुद्धू मियां:—** बहुत अच्छा हुजूर ! अभी भेज रहा हूँ ।  
( सलाम करते हुए बड़े अंदाज से अंदर तशरीफ़ ले जाते हैं । इधर खान साहेब हुक्का पीने में मसरूफ़ हैं ।

कश पर कश लगा रहे हैं। पीछे से डाकिया घ्राता है और चमड़े के बैग से एक चिट्ठी निकालता है। उसकी परछाईं खान साहेब पर पड़ती है और कुछ आहट भी मिलती है लेकिन खान साहेब तम्बाकू के अमल में चूर हो रहे हैं। उन्होंने समझा कि उनका बेटा इनायत आ गया है।)

**खान साहेब :**—तुम आ गए ! अच्छा हुआ, बैठ जाओ। कब तक खड़े रहोगे ? जरा दो कश और लगा लूं। बुद्धू मियां ने तो आज हुक्का सजाने में कमाल कर दिया। इसको छोड़ना गुनाह होगा और बुद्धू मियां की दिल-शिकनी भी ( कश लगाते हुए ) बेटा ! देखो बुद्धू मियां की करामात ! अरे तुम अभी तक खड़े हो ! बैठ क्यों नहीं जाते ? बेटा मेरा कहना तो मान लिया करो !

(डाकिया भौचक्का तथा हैरान खड़ा है कि खान साहेब किसे पुकार रहे हैं। यहाँ तो कोई और है नहीं, मुझे क्यों बेटा बना रहे हैं।)

**डाकिया :** —अजी, जनाब आगा साहेब। मैं आपका बेटा नहीं हूँ ? मैं पोस्टमैन हूँ। यह बैरंग चिट्ठी है आपके नाम, इसे कुबूल कीजिए और मुझे पांच आने पैसे अता फ़रमाइये। मैं आगे चक्कर लगाऊँ।

**खान साहेब :-** (यकायक उछलते हैं और अपनी भूल पर शर्मिन्दा होकर माफी मांगते हैं ।) माफ़ करना मेरे भाई ! अनजाने में यह भूल हुई है । मुझे गलतफ़हमी हो गयी थी । मैंने तुम्हें बेटा कहकर पुकारा यह मेरी सरासर गलती है । माफ़ करना पोस्ट मैन जी !

**पोस्ट मैन :-**—कोई बात नहीं आगा साहेब ! चलो अच्छा ही हुआ आपने अपना बेटा ही बनाया । कहीं और कुछ कह बैठते तो ग़जब हो जाता । लीजिए अपनी चिट्ठी, मैं चलूँ ।

**खान साहेब :-**अब खुश हो गये डाकिया साहेब । तुम बड़े भले आदमी हो । लो पैसे लो, मुझे माफ़ करना भाई !

**पोस्ट मैन :-**आप चिन्ता न कीजिए आगा साहेब ! बड़ी ख़ैरियत हुई कि आपने अपना बेटा ही समझा, कहीं आप मुझे कर्ज़दार समझ बैठते तो और आफ़त आ जाती । न मालूम आप क्या-क्या तारीफ़ें कर बैठते ?

**खान साहेब :-**भाई, भूल-चूक इन्सान ही से होती है । माफ़ करना, अच्छा सलाम !

**पोस्ट मैन :—**जय हिन्द ।

( डाकिया जाता है और खान साहेब बड़ी बेकरारी से खत पढ़ते हैं । उसी समय इनायत खां, सफेद खादी का कुर्ता, जवाहर जैकेट और गांधी टोपी पहने खान साहेब के पास आता है । )

**इनायत :—**किसकी बैरंग चिट्ठी है अब्बा जान ! कौन साहब हैं जिन्हें अभी तक बसन्त की खबर नहीं ? चले जा रहे हैं बैरंग चिट्ठी भेजते ।

**खान साहेब:—**क्या बकता है इनायत ! यह मेरे बुजुर्गवार वालिद साहब का खत है । बेचारे पुरानी वजा के आदमी ठहरे । उनका खयाल है कि बैरंग चिट्ठी मंजिले मकसूद पर जरूर पहुँच जाती है और किसी हद तक ठीक भी है उनका खयाल ।

**इनायत : —**नहीं अब्बा जान ! वह ज़माना अब बदल गया । बूढ़े दादा को लिख भेजिए कि अब बैरंग चिट्ठी भेजने की कत्तई जरूरत नहीं रही । अगर पता गलत हो तो दूसरी बात है वरना अब ऐसा होना मुमकिन नहीं है । अगर कहीं कोई भूल हुई भी तो विभाग कड़ी कार्रवाई करता है । कर्मचारियों को

जवाब देते-देते नाकों चने चबाने पड़ते हैं ।  
हमारे दोस्त पर यह नागहानी आ चुकी है,  
बेचारे महीनों मुअत्तल रहे ।

**खान साहेब** :—यह तो अच्छे आसार हैं इनायत बेटा !  
पाबंदी और मुस्तैदी हर एक इन्सान में  
पैवस्त होनी चाहिए । अपनी ड्यूटी का सही  
माने में अंजाम देना हर एक ओहदेदार का  
पहला फ़र्ज़ होना चाहिए । तुम्हारी बातों  
से मुझे आज बहुत बड़ा सुकून हासिल  
हुआ ।

**इनायत** :—मुझे इजाज़त है अब्बा जान ! मुझे किशोर  
बाबू के साथ परिषद् जाना है । वहां कालि-  
दास के नाटक “शकुन्तला” पर आचार्य जी  
का भाषण होगा, उसमें मेरी शिरकत बहुत  
जरूरी है ।

**खान साहेब** :—इनायत बेटा ! आज तुमसे एक मशविरा  
करना है । वालिद साहब ने मुझे फौरन से  
पेशतर बुलाया है और वहां मुझे कम से कम  
चार महीने लग जायेंगे । तुम्हें अकेले यहां  
सब काम सम्हालना पड़ेगा । इस साल कई

हजार रुपए नादिहन्दों के पास दबे पड़े हुए हैं। उन्हें सख्ती से वसूलना है। इस जिम्मेदारी को बड़ी मुस्तैदी और जां-फ़िशानी से निभाना होगा।

**इनायत** :—आखिर वहां कौन ऐसा जरूरी काम आ पड़ा है जो आप फौरन खाना होना चाहते हैं। मेरा इम्तिहान भी सर पर आ गया है और मुझे एन० सी० सी० के कैम्प में जाना होगा। वहां भी कड़ी मेहनत ली जायेगी। फिर मुझे कहाँ इतनी फुर्सत मिलेगी कि मैं दोनों ड्यूटी सर अंजाम दे सकूँ।

**खान साहेब** :—वहां का काम इतना जरूरी है इनायत, कि मुझे फौरन से पेशतर चला जाना चाहिए। जब से गोवा, डामन, ड्यू पर हमारी हुकूमत कायम हुई तब से सरहदी लुटेरों के हमले बढ़ गये हैं। आये दिन खून-खराबे करते हैं। मवेशी चुराये जा रहे हैं। चोरी से फसल काट ली जाती है। क्या-क्या नहीं हो रहा है? तुम जानते ही हो कि अब वालिद साहेब काफी बुड्ढे हो गए हैं, फिर

भी उन्हें वहां रोज बन्दूक उठानी पड़ती है । गाँव की इज्जत का सवाल जो ठहरा । कुछ समझे इनायत बेटा ?

**इनायत** :—ऐसी हालत में आप का वहां जाना मुनासिब भी नहीं अब्बा ! कौन जाने. . .

**खान साहेब** :—इनायत ! तुम मुझे बुज़दिल बना रहे हो । आइन्दा ऐसी बात जुबान पर मत लाना । मैं किस तरह अपने वालिद की हुक्म उदूली करूँ ।

**इनायत** :—आपका हुक्म सर आंखों पर ! लेकिन इतना जरूर कहूँगा कि दोस्ती और दुश्मनी इंसान के साथ की जाती है न कि हैवान के साथ । वे लुटेरे इंसान नहीं हैं, हैवान हैं । चन्द चाँदी के टुकड़ों पर खरीदे गए हैं, इसीलिए ऐसी जलील हरकतें कर रहे हैं । अच्छा हो आप अपने वालिद साहेब को भी यहीं बुला लें । खतरनाक इलाके में जिन्दगी गुजारना खतरे से खाली नहीं है और वहाँ रक्खा ही क्या है ? कहाँ यहाँ की शान्तिमयी जिन्दगी और वहाँ हर वक्त बन्दूक बांधें गश्त करना

लहमे भर को इत्मीनान नहीं। इन्सान ऐसी फिजा में क्या तरक्की कर सकता है और खास कर एक जईफ इंसान। ये लुटेरे उकसाये गए हैं। इनके पीछे सयासी हथकण्डे चल रहे हैं। कौन जाने आगे ...

**खान साहेब :—**इनायत, तुम भूलते हो। जिस सरजमीं पर हमारे बुजुर्ग पैदा हुए और जहां उन्होंने बहादुराना जिन्दगी शान से बितायी, अपने वतन की शान में बेशुमार कुर्बानियाँ कीं, जहाँ हमारी परवरिश हुई, जहाँ हमें तालीम और तरबियत मिली, जिस खुशगवार आबो-हवा में हम पल कर इतने बड़े हुए, जिसे हमने जन्नत से बेहतर समझा और जिसका गुणगान सारा आलम करता है; उसे हम भूल जाय और ऐशो इशरत की जिन्दगी बिताने के लिए अपने तुनबे को यहाँ बुला लें। लानत है ऐसी जिन्दगी पर इनायत ! यहाँ सवाल एक कुनबे का नहीं, मुल्क की आनबान और उसकी शान का है। जिस जमीं पर हम पैदा हुए, जहाँ का अन्न खाकर हमारी रगों में गर्म खून दौड़ रहा है, उसकी

इज्जत लुटे और हम मैदाने जंग से पीछे हटें, यह कहां की इंसानियत है ? कहां की बहादुरी है ? मुझे बड़ी हैरत हुई तुम्हारे ख्यालात को जानकर इनायत ! ऐसे जीने से मरना ही अच्छा है ।

**इनायत:—** अब्बाजान ! कुछ मेरी भी सुनिए । हुक्म हो तो अर्ज करूँ ।

**खान साहेब :—**इनायत ! बहुत कुछ सुन चुका । तुम ज्यों-ज्यों तालीम पाते जा रहे हो त्यों-त्यों पस्त-हिम्मत होते जा रहे हो और आज तुम मुझे भी वही सबक सिखाने की हिम्मत कर रहे हो । क्या फायदा ऐसी तालीम से जब तालिबइल्म अपने मरकजी फर्ज से ही दूर भागता है । हमारे खानदान के लिए ऐसी तालीम बेसूद साबित हुई । जरा सी जिम्मेदारी सर पर आयी तो उल्टी-पुल्टी दलीलें पेश कर रहे हो । मुझे बड़ी नाउम्मीदी हुई तुम्हारे इस तरह के जजबात से । मुझे तो तुमसे बड़ी-बड़ी उम्मीदें थीं लेकिन आज तुमने सब पर पानी फेर दिया ।

**इनायत:—** (इनायत ने समझ लिया कि इस वक्त बहस करने की जरूरत नहीं ) जिम्मेदारी निभाने में मैं पीछे नहीं रहूँगा अब्बाजान ! लेकिन रुपया और सूद वसूलने की ट्रेनिंग ही मुझे कहाँ मिली है ? आखिर मैं उसे कैसे अंजाम दूँगा ।

**खान साहेब :—**तुम ट्रेनिंग की बात करते हो, आगा का बच्चा होकर ! यह हमारा खानदानी पेशा है । मुझे सिर्फ एक बार वालिद साहब के साथ तगादा करने का मौका मिला था । बस मिल गई वहीं सारी ट्रेनिंग । अगर हमारी अक्ल ठीक रहे तो हमारा व्यापार दिन दूना और रात चौगुना बढ़ेगा । इसमें किसी ट्रेनिंग की जरूरत नहीं, सिर्फ रुपया वसूलते वक्त दिलमजबूत रखना पड़ता है इनायत बेटा !

( इनायत के चेहरे पर व्यंगात्मक मुस्कराहट नजर आता है )

**इनायत:—** फिर भी अब्बाजान !...कुछ इशारा तो चाहिए ही ।

( एक जईफ जुलाहा कांपता हुआ रंगमंच पर आता है, सिर हिल रहा है ओर उसकी बीनाई में भी कमी है ।

इधर-उधर चक्कर लगाकर खान साहेब की ओर बढ़ता है।)

**खान साहेब :—**अच्छा तू ट्रेनिंग चाहता है ! तो यह अच्छा मौका हाथ लगा है। उधर देख ! एक शिकार आ फँसा है। आने दे नजदीक अक्ल के दुश्मन को इधर, ऐसी फटकार बतलाता हूँ कि उसे दिन में ही आसमान के तारे नजर आयेंगे। पिछले रुपयों के देने का नाम नहीं लेता और आज फिर कुबड़ी टेकता हुआ चला आ रहा है जैसे मेरे यहाँ रुपयों का दरख्त लगा है। नामाकूल कहीं का। चल पड़ा खान को लूटने।

**जुम्मन :—** आगा भइया ! आप के पास आये हैं, सलाम।

**खान साहेब :—**सलाम जुम्मन ! कहाँ हैं हमारे रुपये ? पहले उन्हें दो फिर आगे की बात करो। रुपया लेने के लिए तुम लकड़ी टेकते चले आते हो और रुपयों के लिए गिड़गिड़ाते हो मगर वसूली के वक्त खूब टाल-मटोल करते हो। अपने मकान के सैकड़ों फेरे लगवाते हो और बराबर छिपने की कोशिश करते हो। आज

हमारे रुपए अदा करके जाना नहीं तो हड्डी-पसली एक कर दूँगा। रुपये लिए पूरा साल गुजर गया लेकिन देने के लिए फूटी कौड़ी का नाम तक नहीं लेता। तिस पर और रुपया लेने के लिये टूट पड़ा मेरे मकान पर। बेगैरत कहीं का।

**जुम्मन :—** कितना रुपया हो गया अब तक आगा भइया ! गरजमन्द बावला होता है खान भइया ! उसको चाहे कोई कुछ कह ले। जब अपनी ही इन्द्रियाँ जवाब दे चुकी हैं तब और किसी का क्या भरोसा ?

**खान साहेब :—** अब हिसाब पूछने चला है। २५ रुपए लिए थे न ! और वायदा किया था कि तीन रुपए हर महीने में देकर एक साल में सूद मय असल अदा कर दूँगा। वायदा के खिलाफ किश्त न मिलने पर चार रुपये और ज्यादा हरजाना दूँगा। कुल मिलाकर चालीस रुपए हुए न। जल्दी भुगतान करो। ( तेवर बदल कर ) अब मेरा मुँह क्या देखता है ? रुपए निकालता है कि अभी तेरी अच्छी तरह मरम्मत कराऊँ ?

**जुम्मन :-** आपे से बाहर क्यों होते हो खान साहेब ?

**खान साहेब :-** ( खान साहेब सोटा जमीन पर पटकता है और तिरछी निगाह से इनायत को इशारा करता है कि ऐसी झकड़ दिखानी चाहिए बेटा इनायत । ) जितनी गरमी से रुपया टकसाल में बनता है उतनी ही गरमी से रुपया कर्जदार के पास से निकलता है । देखो इस समय यह भीगी बिल्ली बना बैठा है लेकिन मौका पाने पर बाज़ की तरह झपटेगा और रुपये पा जाने पर हवा से बातें करने लगेगा ।

**खानसामा :-** ( खानसामा खान साहेब के कान में कुछ कहता है चिलम बदलते वक्त ) सरकार ! आज का रंग काफी बदला हुआ है । ज्यादा भला-बुरा मत कहिए । मालूम होता है कि इसकी टेंट में काफी रुपए हैं । उनकी गरमी इसके चेहरे पर जाहिर हो रही है ।

**जुम्मन :-** आगा साहेब ! आप अपनी रकम का हिसाब कर लीजिए और भर पाई लिख दीजिए । आप से रुपया लेकर हम भर पाए । बाल-बच्चों के तन पर अब ठठरी रह गयी है । वे अन्न वस्त्र को कलपते हैं । अब आप के

चंगुल में कोई नहीं फंसेगा। बहुत दिन जुल्म किया आप ने हम सब पर। अब दया करो, आगा साहेब।

**खान साहेब :-** ओह ! मैं अब समझा ! ईख की खेती खूब अच्छी थी। मन माना गुड़ बेचा है। इसी से रुपये की गरमी है। यह गरमी सदा नहीं रहेगी बुड़ढे।

**जुम्मन :-** गुड़ तो अभी नहीं बेचा है आगा साहेब ! और न बेचने का विचार ही है। आप अपना रुपया चुकता करो और बातों से क्या फायदा ? आप को आम खाने से मतलब कि पेड़ गिनने से ? ...

**खान साहेब :-** कहां से मिला है रुपया बुड़ढे ? अब समझ में आया ! गांव के बनिया से लिया होगा। जानते भी हो ! वह दुगुना सूद लेता है। तुम लोगों को वह तबाह करके छोड़ेगा। उसके जाल में मत पड़ो जुम्मन ! उसके रुपये लौटा आओ।

**जुम्मन :-** अब न आगा, न बनिया, न महाजन और न साहू। अब तो सब सूद खोरों का

युग बीत चुका । भगवान भला करें ।  
 (जुम्मन के इस उत्तर से इनायत के चेहरे पर खुशी की लहर दिखाई पड़ती है । मन ही मन वह जुम्मन की हिम्मत की तारीफ़ करता है ।)

**खान साहेब :—**क्यों जुम्मन ! क्या कहीं गड़ा हुआ खजाना मिल गया क्या ?

**जुम्मन :—** खजाना तो एक दो बार मिलता है और खत्म हो जाता है । यह तो जिन्दगी भर का चहबच्चा मिल गया है । ऊपर से भगवान की कृपा रहे, नीचे पंच परमेश्वर और करमनाथ प्रधान की, तो गाँव में अचला अचल है । आज बख्तावर सिंह, सेवाराम, भगत कुरमी और दीनदयाल को भी यही खजाना मिला है । वे सब आते होंगे आपका कर्ज चुकाने । आज हमारा गाँव पाक हो जायेगा आप के कर्ज के भार से । अब तुम्हें वहाँ आने का मौका ही नहीं मिलेगा खान !

(आगा मत्थे पर हाथ रख कर पछताता और सोचता है कि अब उसका रोजगार वहाँ न चल सकेगा । उसकी चाल लोग समझ गये । अब उसकी दाल वहाँ न गलेगी ।)

**खान साहेब :—**क्या उस खजाने का हिस्सा हम लोगों को भी मिल सकता है जुम्मन मियाँ ?

(बड़ी आज़िजी के साथ उसने जुम्मन मियां से पूछा)

**जुम्मन मियां :-** मिल क्यों नहीं सकता आगा ! लेकिन तुम तो जनता के धन को खुद ही हड़पना चाहते थे । यह धन तो उसको मिलता है जो ४०-५० वर्ष से देश की आजादी की लड़ाई में मनसा, वाचा और कर्मणा से सहयोग देता आया है और जिसने अपनी रोजी रोजगार छोड़ कर स्वतन्त्रता-संग्राम में अपना सर्वस्व होम कर चुका है । अब उन्हें बुढ़ौती के समय में अपनी जनप्रिय सरकार ने पेंशन दी है ताकि उन बुढ़ों की जिन्दगी का निस्तार अच्छी तरह हो सके । आप भी ईमानदारी से कारोबार करो और सन्तोष की जिन्दगी बिताओ तो सरकार आपकी उन्नति का रास्ता जरूर निकालेगी । हमारे देश के नेताओं को मनुष्य से नफ़रत नहीं है बल्कि उनके जुल्म और अत्याचारों से घृणा है ।

**इनायत :-** अब्बाजन ! ठीक कहता है बुढ़ा ! हमारे नेता विदेशियों को गिरी निगाह से नहीं देखते बल्कि उनकी ज़ालिमाना हुकूमत से

इतिफ़ाक नहीं करते । सैकड़ों वर्ष तक इन विदेशियों ने हमारे मुल्क को हर तरह से बरबाद किया । उनकी विनष्टकारी सल्तनत यहाँ से अब खत्म हो गयी तो भी वे लोग हमारे मित्र ही बने रहे जैसे उनकी तर्ज हुकूमत यहाँ से उठ गयी उसी तरह आपके तर्ज रोजगार पर भी ज़वाल आयेगा । गरीब किसान कहाँ तक आपके बनाये रेट के मुताबिक सूद दर सूद दे सकेगा । अब दुनिया बहुत आगे बढ़ गयी है अब्बाजान ! गाँव-गाँव में सोसाइटियाँ बन गयी हैं । लोगों को पेंशनें मिल रही हैं । जीवन-बीमा का प्रसार हो रहा है । क्वापरेटिव बैंक खुल रहे हैं । इनामी बांडों का दौर दौरा है । (बस्तावर सिंह, सन्तराम, भगत कुरमी और दीनदयाल चौधरी का प्रवेश । )

**बस्तावर सिंह:**--आगा ! आप अपना हिसाब चुकता कर लीजिए । आज भगवान की कृपा से हम लोगों को पेंशन मिली है । आप का बोझ उतार कर हम सब लोग संतोष की सांस लेंगे । भगवान ने यह दिन दिखलाया कि हम सब आपके कर्ज से उन्नत हो रहे हैं ।

सन्तराम:— ठा० बख्तावर सिंह ठीक कहते हैं। अपने भारत से मुक्त कर आज हम लोगों का उद्धार करो खान साहेब !

खान साहेब :—बेटा इनायत ! आखिर इन बुद्धों को सरकार पेंशन क्यों बांट रही है ? सरकार क्यों अपना रुपया इस तरह पानी में फेंक रही है ! क्या फ़ायदा होगा सरकार को इन खूसटों को रुपया बाँटने से ? ये लोग किस काम आयेंगे ? यह कहां की अकलमन्दी है ? आखिर हम लोगों के रोज़गार को सरकार क्यों बरबाद करना चाहती है ?

इनायत :— इसे रुपया फेंकना नहीं कहते अब्बाजान ! यही सही इस्तेमाल है मुल्क की दौलत का। आपके और सरकार के नुकते नजर में यही फ़र्क है। आप अपनी और अपने कुनबे की जिन्दगी खुशहाल बनाना चाहते हैं और वह भी गरीबों की जिन्दगी पामाल करके। लेकिन सरकार मुल्क के हर इन्सान को अपने कुनबे का मेम्बर समझती है और इसीलिए उसकी जिन्दगी को बेहतर बनाने के लिये इस तरह बेकरार है जिस तरह

आप अपने वालिद बुजुर्गवार को हर महीने उनके अखराजात के लिये अपनी कमाई का एक हिस्सा भेजते हैं उसी तरह हमारी सरकार भी इन बेबस इन्सानों को पेंशन देकर अपना फ़र्ज मन्सबी पूरा करती है। अब यहाँ ग़ैर मुल्क की हुकूमत का बोल-बाला नहीं है। आजकल दिल्ली के क़िले पर हमारा क़ौमी तिरंगा झण्डा फहरा रहा है जिसकी पनाह में इन्सानियत की बेल सरसब्ज होती जा रही है। अगर यही रवैया कायम रहा तो सारा आलम हिन्दुस्तान से सबक हासिल करेगी। अब्बाजान ! हिन्दुस्तान की सरजमीं में हमेशा से देवता पैदा होते आये हैं। यहाँ हैवानों को कभी कामयाबी नहीं मिली।

**भर्गंत कुरमी:**—दीनदयाल भैया ! खान का बेटा तो हमारे नेताओं का साथी जान पड़ता है।

**दीनदयाल:**— सतसंगति का प्रभाव और विद्या का ज्ञान कभी व्यर्थ नहीं जाता महतो !

**खान साहेब:**—इनायत बेटा ! तुम्हारी यह दलील मेरे नाकिस जेहन में बिल्कुल जगह नहीं पा

रही है। तुमने मेरे वालिद साहेब की बात चलाई। वह तो मेरे करमफरमा रहे हैं। उन्होंने मुझे पाला पोसा, हर तरह की तकलीफ झेलकर मुझे इतना बड़ा किया, रोजगार के लिये हजारों रुपये दिये और हर तरह से हमारी हिम्मत अफजाई की और मेरे ऊपर उनके बेशुमार एहसानात हैं। मैं जितनी भी उनकी खिदमत करूँ वह सब कम है।

**बुद्धू मियां:—** छोटे सरकार ! खान साहेब ठीक ही फरमा रहे हैं। उन्होंने उनके लिये क्या-क्या नहीं किया ? उन्हीं की दुआ से इनकी धाक और इनका स्तबा सारे इलाके में बुलन्द है। उन्हीं की बदौलत खान साहेब दिन दूनी और रात चौगुनी तरक्की कर रहे हैं।

**इनायत:—** अब्बाजान ! आप अपने बुजुर्ग वालिद को काबिले इमदाद समझते हैं और दुनिया की ऐशोइशरत का हकदार समझते हैं। लेकिन हमारी भारतीय हुकूमत की किशती की पतवार जिनके हाथ में है वह मुल्क के ही

नहीं, बल्कि तमाम दुनिया के बच्चों को अपनी संतान समझते हैं। अगर चौदह नवम्बर को उनके कुनबे की मर्दुमशुमारी की जाय तो पता चलेगा कि चाचा नेहरू का कुनबा कितना बड़ा है। इसी तरह तमाम खिलकत और रैयत को भी वह सगे संबंधी समझते हैं। इसी पाक वसूल के मातहत आज की सरकार अधिक उम्र वाले इन्सानों को अपना बुजुर्गवार मान कर उनकी इस तरह खिदमत करती है ताकि वे लोग बाइज्जत अपनी जिन्दगी बिता सकें।

**सन्तराम:-** भैया दीनदयाल, कुछ आप भी सुनें ?

**दीनदयाल:-** “सत्संगति महिमा नहिं गोई” बाबा तुलसीदास कह गये हैं सन्तराम !

**खान साहेब:-** बेटे इनायत ! तुम्हारी तकरीर इतनी पुरजोर है कि मुझ जैसा संगदिल इन्सान भी पानी-पानी हुआ जा रहा है। मगर मेरे दिल में एक पेचीदा सवाल रह-रह कर उठ रहा है जिसका हल किसी तरह मेरे दिमाग में नहीं आ रहा है बेटे !



वह कौन ऐसा अहम सवाल है अब्बाजान !  
आ मुझे भी उससे आगाह करें। शायद  
में कुछ रोशनी डाल सकूं।

**खान साहेब :—** क्यों नहीं बेटे ! तुमसे मैं क्यों अपने दिल  
का राज छिपाने लगा। खासकर जब मुझे  
तुम्हारे ख्यालात से इत्तिफाक करना पड़  
रहा है।

**बुद्धू मियां :—** ठीक ही तो कहते हैं खान साहेब आप !  
छोटे सरकार देखने में ही कमसिन दिखायी  
पड़ते हैं वरना इनकी काब्लियत का इंसान  
चिराग लेकर ढूँढने पर भी नहीं मिलेगा।  
कैसे बुलन्द ख्यालात हैं फ़रजंद के। क्यों न  
हो, बड़े कालिज में तालीम पा रहे हैं न ?

**इनायत :—** तारीफ के लिये शुक्रिया बड़े मियां !  
कुछ उनकी भी फ़िक्र है जो चार इन्सान  
आपके दरवाजे पर मेहमान हैं।

**बुद्धू मियां :—** आप मुत्मइयन रहें छोटे सरकार ! जो  
जिस काबिल है उसकी वैसी ही खिदमत  
की जा रही है। वे लोग नशापत्ती कर  
रहे हैं। सुर्ती तम्बाकू और चिलम का

इन्तजाम करा दिया गया है। एक बार और ताकीद किये दे रहा हूँ ताकि कोई शिकायत न हो।

(बद्धू मियां ग्रामीणों की ओर जाते हैं, उनके साथ सुर्तों तम्बाकू में खुद शरीक होते हैं और खूब छींकते हैं।)

**खान साहेब :—**हां, सवाल यह पैदा हो गया है इनायत बेटा ! क्या हमारे बुजुर्गवार पुष्ट दर पुष्ट से गलत काम करते आये हैं ? क्या हमारे बुजुर्गों में इन्सानियत की बू नहीं थी ? उन लोगों ने क्यों ऐसी लीक चलायी कि हम लोग लकीर के फकीर बन बैठे ?

**इनायत :—**किस माहौल के असरात की वजह से बुजुर्गों ने यह पेशा अख्तियार किया था, उसे वही लोग जानें और जाने वह जमाना। हिन्दुस्तान की पाक जमीन पर हमेशा से सच्चाई और नेक-नीयती की शाखें फूलती-फलती आयीं हैं। महाराज हरिश्चन्द्र अपने कौल के पाबन्द थे। उन्होंने क्या-क्या मुसीबतें नहीं झेलीं। मरघट पर अपने इकलौते बेटे की लाश उसकी मां की गोद में उन्होंने देखी; फिर भी सच्चाई का

पल्ला नहीं छोड़ा और उन्होंने अपने जिगर के टुकड़े को जलाने की इजाजत बगैर मरघट की चुंगी लिये नहीं दी। आखिर मजबूर होकर बेचारी महारानी को अपनी आधी साड़ी फाड़कर देनी पड़ी। राजा शिवि ने अपने जेरेसाया आये हुए कबूतर को बाज के हवाले नहीं किया बल्कि अपने जिस्म के लोथड़ों को उसके सुपुर्द कर दिया। महर्षि दधीचि ने देवताओं की इमदाद के लिये अपनी हड्डी कमान बनाने के लिए सौंप दी। महाराज रामचन्द्र ने एक धोबी के इलजाम लगाने पर महारानी सीता को जलावतन कर दिया था। आम जनता की बहबूदी का ख्याल इस पाक मुल्क की हुकूमत को करना ही पड़ता है। इसी तरह की हज़ारों मिसालें दी जा सकती हैं। अब आप खुद गौर करें कि आपका व्यापार यहाँ कैसे पनप सकता है और किस तरह यहाँ के किसान खुशहाल रह सकते हैं। मेहरबानी करके आप जरा ठण्डे दिल से सोचें।

**खान साहेब:—**बेटे ! इन मिसालों की ताईद तवारीख नहीं करती । इसलिये ये बातें काबिले ऐतबार नहीं कही जा सकतीं । ये सब हमें अफसाने बतलाए गये हैं । उन वाकियात को क्यों फजूल दोहरा रहे हो ?

**इनायत :—** अब्बाजान ! मैं आपकी बात को सही भी मान लूं तो क्या पूज्य बापू की मौत का वाकया तारीखी नहीं कहा जा सकता ? यह नागहानी तो आप के सामने ही नाजिल हुई थी । क्या उन्होंने अपनी खुदगरजी के लिए तमाम उम्र मुल्क की खिदमत में लगाई ?

**खान साहेब:—**यह तो अभी चन्द साल की ही बात है । उनकी नेकनीयती में किसे शक हो सकता है बेटे !

**इनायत:—** पूज्य बापू ने जीते जी मुल्क की खिदमत की । मुल्क की शान को दो बाला करने में सारी उम्र बितायी और मुल्क की बहबूदी के लिये अपनी बेशकीमती जिन्दगी गंवाई । यह सब क्या उन्होंने अपने कुनबे के लिये किया ? सारा हिन्दुस्तान, सारी दुनिया, हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, जैन और पारसी सब

उनके लिए अपने थे । वे मानवता और इन्सानियत के पुजारी थे । उन्हें ऊंच नीच, अमीर गरीब सब बराबर थे । इस तरह की जीती जागती मिसालें आज भी इस सरजमी में पाई जाती हैं । मुल्क की आजादी हासिल करने में लाखों नौनिहाल शहीद हुए, लाखों बहनें विधवायें हुईं, हमारे नेताओं ने जेल की यातनायें सहੀं । उनके ऊपर लाठियां चलीं और गोलियां बरसीं फिर भी.....

**खान साहेब:**—मेरे लायक बरखुरदार ! तू बड़ी उम्र पाये! खुदा से मेरी यही आरजू है । मुझे गलत-फहमी हो गयी थी कि तुम कालेज में पढ़कर गुमराह हो गये हो लेकिन दर असल मैं ही गलत रास्ते पर था; और तुम्हें भला बुरा कहता रहा ।

**बुद्ध मियां:**—मैं भी तो यही कहता था खान साहेब कि हमारे छोटे सरकार इल्म की दुनिया में कमाल हासिल कर चुके हैं । खुदा इनकी उम्र बड़ी करे ।

**खान साहेब:**—तुम ठीक कहते हो बुद्ध मियां ! दुनिया की निगाहों में इसका वालिद मैं हूं लेकिन अक्ल

और इल्म की दुनिया में यह मेरा बुजुर्ग निकला । लेकिन सरहद की खुराफात क्यों-कर दूर होगी बेटे ! और मैं वालिद साहब को क्या ज़वाब दूँ ?

**इनायत:—**

अब्बाजान ! आप उनकी जरा भी फिक्र न करें और न सरहद्दी खुराफातों की । जिस तरह गोआ, डामन और ड्यू का मसला चुटकी बजाते हल हुआ है उसी तरह सरहद्दी लुटेरे खुदबखुद नेस्तोनाबूद हो जायेंगे । हमारी सरकार उन्हीं की फिक्र में है । कौन जाने वे लोग कब मौत के घाट उतार दिये जायें या कब वे हमारे सामने घुटने टेक दें और अपने किये की माफी मांग कर अमनो-चैन की जिन्दगी बिताएं? इक्का दुक्का उनसे लड़ाई मोल लेना ठीक नहीं । 'सौ सुनार की, न एक लुहार की' कहावत तो आपने सुनी ही होगी । चौदह वर्ष बाद गोआ, डामन, ड्यू अपनी हुकूमत में मिलाये गये । कौन जाने कुछ दिनों में सरहद की खुराफात भी खत्म हो जाय और उन लुटेरों को अपने किए का फल भी मिल जाये ।

**जुम्मन मियां:**—लाख बरस जियो छोटे सरकार ! यह तो होगा ही । आप के मुंह में घी शक्कर ।

**खान साहेब:**—तुम बुरा मान गये जुम्मन मियां ! मैं तो इनायत बेटा को ट्रेनिंग दे रहा था लेकिन आज मैंने खुद ट्रेनिंग हासिल की है इनायत से ।

**जुम्मन मियां:**—चलो बड़ा अच्छा हुआ आगा साहेब ! 'भोर का भूला शाम को घर लौट आये' तो उसे भूला नहीं कहते ।

**बुद्धू मियां :**—(धीरे से) ठीक ही कहते हो जुम्मन मियां ! संगदिल खान साहेब भी मोम हो गये । क्या दिमाग पाया है छोटे सरकार ने ? हाईकोर्ट के बैरिस्टर से कम जेहन नहीं रखते छोटे सरकार ! खुदा करे.....

**खान साहेब :**—बुद्धू मियां और भाई जुम्मन मियां ! बुलाओ ठाकुर बख्तावर सिंह और सन्त राम वगैरह को, वे अपने हिसाब कर लें और मैं भर पाई लिख दूं ।

[शाहिदा बानू का प्रवेश—एक षोडश वर्षीया सुन्दरी, फ़टी धोती, मैली-कुचैली कुरती पहने, नंगे पांव मंच पर आती है । वह सिसकती हुई आगे बढ़ती है और अपने अम्बा को पहचान कर पुकारती है । दौड़कर जुम्मन मियां की गोद में गिर पड़ती है । जुम्मन मियां और सभी भौचक्के रह जाते हैं । जुम्मन मियां उसे उठाते हैं ।

और धीरज देते हैं। खान साहेब को देखकर शाहिदा डर जाती है और यकायक चिल्ला उठती है। ]

**शाहिदा :—** अब्बाजान ! आप यहाँ से जल्दी चलिए नहीं तो खान आपकी जान ले लेगा। अम्मा को मालूम हुआ है कि खान ने तुम्हें गालियाँ दी हैं और हण्टरों से पिछले दफ़े की तरह मारा पीटा है। इस खबर को सुनकर अम्मा का दिल बैठा जा रहा है। वह लम्बी-लम्बी सांसें ले रही हैं। आपका नाम लेकर जोर जोर से पुकार रही हैं। पता नहीं जिन्दा हैं कि नहीं। आप जल्दी चलिए अब्बा ! ठाकुर दादा ! आप लोग भी यहाँ से भाग चलिए। गाँव में कुहराम मचा है। मैं हकीम साहेब को बुलाने जा रही हूँ।

**खान साहेब—** नहीं बेटा ! नहीं, मैंने जुम्न मियाँ को बुरा भला भी नहीं कहा, मारना पीटना तो दूर रहा। एक बार मुझसे जो गलती हो गयी वह कभी नहीं होगी। लोगों ने तुम्हारी अम्मा को गलत खबर दी है। अब मैं इन्सान हो गया हूँ। रुपये पैसे के लिए अब मैं कभी ऐसी हैवानियत नहीं करूँगा। मुझ पर

झूठी तोहमत लगायी जा रही है। मैं कसम खाता हूँ कि आइन्दा मैं कभी भी जुल्म नहीं करूँगा बेटा ! मेरी बातों पर यकीन करो। अब खान बिल्कुल बदल गया है और वह हमेशा तुम लोगों की बहबूदी चाहेगा। इनायत बेटा ! तुम जाओ और इसकी अम्मा को मेरी तरफ से इत्मिनान दिला दो। मुझे इस गुनाह से बचाओ बेटे !

( शाहिदा जुम्मन मियां को छोड़ कर हकीम साहेब को बुलाने जाती है। यकायक इनायत खाँ और शाहिदा की आँखें चार होती हैं। शाहिदा मंच छोड़कर बाहर जाती है। जुम्मन मियां और इनायत खाँ टमटम पर बैठ कर जुम्मन के घर जाते हैं। )

( खान साहेब अपनी बैठक में परेशान घूम रहे हैं। कभी वह अपनी पेशानी का पसीना पोंछते हैं और कभी दीवाल पर टंगी तस्वीर को गौर से देखते हैं। थोड़ी थोड़ी देर बाद वह हाथ मलते हैं। रह रह कर वह बड़- बड़ाते हैं और अपने सर के बालनोंचते हैं और चोटहिल चीते की तरह दहाड़ते हैं। )

**खान साहेब:—**(स्वगत) या खुदा ! यह कैसा जमाना सर पर आ गया है। अपने पुस्तैनी पेशे पर कायम रहना भी दुशुआर हो रहा है। इज्जत वालों की आबरू धूल में मिला दी

गई है। कल के भिखारी जाअ बादशाह  
 बनाये जा रहे हैं और हम लोगों को पैरों  
 तले कुचलना चाहते हैं। खैर देखा जायेगा।  
 (इसके बाद खान बड़ी तेजी से बुद्धू मियाँ को पुकारते हैं।)  
 ओ बुद्धू मियाँ ! कहाँ चले गये बुद्धू मियाँ !  
 (खान की परेशानी बढ़ती जाती है और बुद्धू मियाँ की  
 गैर हाजिरी उन्हें और बेकरार बना रही है।  
 उनका सारा गुस्सा बुद्धू मियाँ पर उतरता है। वह बुद्धू  
 मियाँ ! बुद्धू मियाँ ! कहते हुए तेजी से घर के अन्दर  
 जाते हैं।)

—पटाक्षेप

## अंक २

\*

### दृश्य १

( एक टूटे फुटे मकान की दालान में शाहिदा की अम्मा एक टूटी चार-पाई पर पड़ी कराह रही है । चारपाई के सिरहाने एक छोटा हुक्का रखा । हुआ है । पास ही एक मन्बिया पड़ी है और सिरहाने की ओर एक लोटा । दालान की दीवाल से लगे हुए जुम्मन मियाँ के हल और जुआट रखे हुए हैं । दालान में एक ओर तोते का एक पिंजड़ा और दूसरी ओर कबूतर के अड्डे टंगे हैं ।

( जुम्मन मियाँ और इनायत खाँ का प्रवेश । मरीजा को हाँफते हुए देख कर इनायत अपनी शाल उसे ओढ़ा देता है । कुछ देर बाद वह आँख खोलती है ।

जुम्मन मियाँ:—क्या हो गया है तुम्हें शाहिदा की अम्मा ?

शाहिदा की माँ:—तुम आ गये सही सलामत उस जालिम के चंगुल से ? मैंने तो समझा आज वह पिछले दिनों की तरह तुम्हारी हड्डी पसली एक कर देगा ।

**जुम्मन मियां:**—नहीं शाहिदा की अम्मा ! ऐसी बात नहीं है । अब तो खान साहेब बहुत मेहरबान हो गये हैं । तुम्हें देखने के लिए उन्होंने अपने बेटे इनायत खाँ को भेजा है । शाहिदा हकीम साहेब को बुलाने गयी है । जरा इधर भी तो देखो.....

( शाहिदा की अम्मा करवट बदलती है और इनायत खाँ को देखकर कहती है । )

**शाहिदा की माँ:**—बैठ जाओ भैया ! यहां कहां कुरसी, मेज तोसक और तकिया ? यहां तो मचिया और टूटी खटिया है । हम गरीबों के घर आप ऐसे अमीरों को कहाँ आराम ? यहाँ तो तकलीफ ही तकलीफ है ।

( शाहिदा की माँ खांसती है और थूकना चाहती है । इनायत खाँ उसका थूक अपनी रेशमी रुमाल से साफ करता है । उसकी सेवा, भक्ति और उदारता देखकर शाहिदा की माँ और जुम्मन मियाँ की आँखों में प्रेमाश्रु झलकते हैं । )

**इनायत खाँ:**—अब आप आराम करें । यहाँ मुझे कोई तकलीफ नहीं है । (शाहिदा की माँ को सहारा देकर लेटाता है ।)

**जुम्मन मियाँ:**—इनायत भैया ! क्यों इतनी तकलीफ करते हो ? आराम से बैठ जाओ ।

शाहिदा की मां:—बस बेटा ! तुम्हारे अहसानों से मैं…… ।

(इतना कहते कहते उसकी घिघी बंध जाती है । वह इनायत खाँ को कातर नजरों से देखती है ।)

इनायत खाँ:—आप जरा भी फिक्र न करें । मैं अपना फर्ज अदा कर रहा हूँ । आपको सख्त सरदी लग गयी है । नमोनिया का आसार मालुम पड़ता है ।

शाहिदा की मां:—बेटा ! अब तो मेरी बीमारी काफूर हो गयी । तुम लोगों को देखते ही बेरवाली चुड़ैल भी मुझको छोड़ कर भाग गयी है । हरखू ओझा ने भी लवांग तोड़ी थी, और बड़ी मानता भी की थी, तब कहीं मेरी कुछ हालत संभली, नहीं तो सांस लेना मुहाल था बेटा !

इनायत खाँ:—(हँसता है) आप इन ढकोसलों और अन्ध-विश्वासों में न पड़े । किसी तजुबेकार हकीम से दवा करायें । जुम्नन मियां जल्दी से आग मंगवाइए । इनका सेंक करना बहुत जरूरी है ।

(जुम्नन मियां आग लेने अन्दर जाते हैं और बाहर से हकीम साहेब को लेकर शाहिदा आती है । हकीम साहेब काफी बुड्ढे हैं । उनकी दाढ़ी, झूँठें और सर के बाल

बिलकुल सफेद हो गये हैं। हकीम साहेब की कमर झुकी हुयी है और वह छड़ी के सहारे चल रहे हैं। रह रह कर पान के डिब्बे से पान की गिलौरियां निकालते और खाते हैं। बटुए से तम्बाकू निकालते हैं और अजीब और गरीब ढंग से मुँह में रखते हैं।)

**शाहिदा:—**(हकीम साहेब के पीछे-पीछे शाहिदा दवाइयों का एक बक्स लेकर सहन में आती है। अपनी अम्मा के पास सिर्फ इनायत खां को देखकर चौंकती है और उसे कृतज्ञता की दृष्टि से देखती हुई अपनी मां से पूछती है।) अम्मा! अब कैसी तबियत है? अब्बाजान कहाँ गये? (इनायत सिर्फ इशारे से शाहिदा को घर के भीतर भेजता है और हकीम साहेब की ओर मुखातिब होकर कहता है।)

**इनायत खां:—**हकीम साहेब ! सलाम। आप इधर तशरीफ लाइये। मरीजा को जरा झपकी आ गयी है।

**हकीम साहेब:—**सलाम बेटे इनायत खां ! मरीज को नींद आना तो अच्छा ही होता है। मगर आप यहाँ कैसे आ टपके ?

(हकीम साहेब की बातों पर इनायत खां केवल मुस्कराता है।)

**इनायत खां:—**जुम्न मियां मेरे वालिद के पक्के दोस्त हैं। अम्मा की तबियत ठीक नहीं थी, इसीलिए इनके साथ आ गया हूँ।

(हकीम साहेब व्यंग्यपूर्ण दृष्टि से इनायत को देखते हैं। शाहिदा और उसके अब्बा इनायत के पीछे खड़े हैं और उसकी नेकनीयती और शराफत पर ताज्जुब करते हैं। इसी बीच शाहिदा की अम्मा करबट बदलती है।) (शाहिदा की अम्मा इनायत खां की जुबान से 'अम्मा' सुनकर उसे सस्नेह देखती है।)

शाहिदा की मां:—बहुत बहुत शुक्रिया इनायत बेटे ! तुम फरिश्ता होकर मेरी झोपड़ी में आ गये हो, वरना मैं तो चल बसी थी।

इनायत खां:—आप मुत्मइन रहें अम्मा ! जनाब हकीम साहेब भी तशरीफ ला चुके हैं। रही सही बीमारी एक दम काफूर हो जायगी। (शाहिदा की अम्मा इनायत खां की जुबान से फिर 'अम्मा' सुनकर उसे बड़ी मुहब्बत से देखती है।)

शाहिदा की मां:—सलाम हकीम साहेब ! अच्छा हुआ आप आ गये।

हकीम साहेब:—(सलाम कबूल करते हुए हकीम साहेब अपना पुराना चश्मा पहनते हैं और नब्ज देखने के बाद वह मरीजा की आँखें भी खोलकर देखते हैं।)

सरदी ने निमोनिया की सूरत इख्तियार कर ली है। सेंक होना बहुत जरूरी है। रुई के फाहे गरम करके सीने पर बराबर रक्खे जायें और इन पुड़ियों को गुनगुने पानी में

घोलकर तीन-तीन घन्टे बाद पिलाया जाये ।  
इन्शाअल्लाह ! कल तक तबियत ठीक हो  
जायगी । घबड़ाने की कोई बात नहीं है ।

(हकीम साहब अपना चश्मा आँख पर से उतारते हैं और  
अपनी जेब में रखते हैं । डिब्बे से पान की गिलौरी निकालते  
हैं और इनायत को देते हैं । इनायत शुक्रिया अदा  
करता है और दाहिने हाथ से पान लेता है )

**खान साहेब:**—हकीम साहेब! मेहरबानी करके कल तशरीफ  
लाइयेगा ।

**हकीम साहेब:**—भला मुझे यहां आने में क्या इतराज हो  
सकता है ? लेकिन...

**इनायत खां:**—आप लेकिन की बात जुबान पर न लाइए  
हकीम साहेब! आपको बराबर फीस मिलती  
रहेगी आप इत्मीनान रखें ।

**हकीम साहेब:**—वल्लाह आप क्या फरमा रहे हैं छोटे सरकार  
मुझ जैसे हकीम को मरीज देखने का  
दोबारा मौका ही नहीं मिलता ।

(सब लोग हक्के बक्के रह जाते हैं और हकीम साहब की  
ओर आँखें फाड़ फाड़ कर देखने लगते हैं )

**इनायत खां:**—आप यह क्या फरमा रहे हैं हकीम साहेब !  
(सभी लोग ताज्जुब की निगाह से देखते हैं ।)

**हकीम साहेब:**—मैं ठीक ही कह रहा हूँ छोटे सरकार ! मुझे समझने में आप लोगों को गलतफहमी हो गयी है । वरना.....

**इनायत खाँ:**— इसमें गलतफहमी की कौन सी बात है ? फीस के लिए कोई हकीम ऐसी अपशकुन की बात किसी मरीज के बारे में नहीं कहता है ।

**हकीम साहेब:**—छोटे सरकार! अगर फीस के लिए ही दवा करूँ तो आजकल के डाक्टरों और हकीमों की तरह खांसी जुकाम के मरीजों को भी महीनों लटकाए रहूँ और अपने दवाखाने का रोज चक्कर लगवाऊँ और मुझे बराबर फीस भी नजर होती रहे । हमारे ऐसे हकीम मर्ज की दवा करते हैं । दो चार गोलियां खिलाईं कि मर्ज का नामोनिशां मिटा । फिर कौन लौट कर हकीम के दवाखाने की ओर झांकता है, फीस देना तो सैकड़ों कोस दूर रहा छोटे सरकार !

**इनायत खाँ:**— यह बात है तो सचमुच हम लोगों को गलत-फहमी हुई । माफ करना हकीम साहेब !

**हकीम:**— कोई बात नहीं छोटे सरकार! आजकल उल्टी ही गंगा बहती है । असलियत पर पर्दा पड़ा

हुआ है। नकली पेशेवर हकीम, वैद्य और डाक्टर मरीजों का खून चूसकर ऐशोइशरत की जिन्दगी बिता रहे हैं। खुदा गारत करे ऐसे हकीम और डाक्टरों को जो इन्सानी चोले में हैवान हैं। वे क्या जाने खल्क की खिदमत कैसे की जाती है? अच्छा अब मैं चला।

(सब सलाम करते हैं और जुम्मन मियां हकीम साहेब को पहचाने बाहर तक जाते हैं। शाहिदा रई के गत्ते तवे पर गर्म कर रही है और इनायत उसके हाथ से गत्ते लेकर मरीजा की पीठ, बगल और सीना सेंक कर रहा है। कभी-कभी गत्ते के लेन देन में एक दूसरे के हाथ छू जाते हैं। दोनों अपनी-अपनी गल्ती की माफी मांगते हैं। कभी शाहिदा और कभी इनायत एक दूसरे को शोख निगाह से देखते हैं।)

**शाहिदा:—** आप क्यों तकलीफ उठा रहे हैं? मैं दोनों काम एक साथ कर लूंगी। अब आप ज्यादा: एहसान न लादें हम गरीबों पर।

**इनायत खां:—** क्यों? क्या मैं हाथ पर हाथ रखे बैठा रहूँ। ऐसे नाजुक मौके पर एक दूसरे का हाथ बंटाना हरेक इन्सान का फर्ज है। मुझे तो ऐसी ही तालीम और तरबियत मिली है। तुम क्यों मुझे गैर समझती हो?

**शाहिदा:—** (लजीली निगाह से इनायत को देखते हुए) यह तो आप बजा फरमाते हैं। लेकिन हम लोग यों ही आपके एहसानों से.....

(शाहिदा इनायत खां पर कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि डालते हुए कोमल भावनाओं को प्रदर्शित करती है। इनायत भी उसी अन्दाज से शाहिदा को निगाह भर देखता है। इसी बीच जुम्मन मियां रंगमंच पर दाखिल होते हैं और इनायत को सेबा में मशगूल देखकर दिल ही दिल में मशकूर होते हैं।)

**जुम्मन मियां:—**छोटे सरकार ! अब तो शाम होने को आयी। खान साहेब आपका रास्ता देख रहे होंगे। अब आप तकलीफ न करें। मैं आ गया हूँ।

**इनायत खां :—**जुम्मन मियां ! मैं आपके इन्तजार ही में बैठा था। अब आप आगये। मरीजा की देखभाल कीजिए। मैं चल रहा हूँ सलाम ! (थोड़ी देर रुककर सोचता है, और अपना मनीबेग निकालता है) और हां ये दस रुपये रख लीजिए शायद किसी वक्त जरूरत पड़े। अच्छा सलाम !

(सलाम कबूल करते हुए जुम्मन मियां कहते हैं)

**जुम्मन मियां:**—छोटे सरकार ! आप बड़े गरीब परवर हैं । खुदा आपको 'जीनत' बख्शे ("जीनत" शब्द सुनकर इनायत कुछ सोचने लगता है) हमारे कुनबे के लिए तो आप देवता होकर आ गये । आपका एहसान मैं कैसे भूल सकूंगा ?

**इनायत खां :**—यह तो आपकी जर्रा निवाजी है । मैं तो अपने को जनता का सेवक ही मानता हूँ । हूँ । बीमार की तीमारदारी बड़ी मुस्तैदी से होनी चाहिए । अच्छा अब चलूंगा ।

(शाहिदा की तरफ इशारा करता हुआ बाहर जाने लगता है और जुम्मन मियां उसको पहुंचाने जाता है । शाहिदा भी धीरे-धीरे दरवाजे तक पहुंचाने जाती है । वह इनायत खां को आभार पूर्ण सस्नेह निरखती है । उसकी पलकें प्रेमाश्रु से बोझिल नजर आती हैं । रोम रोम से कृतज्ञता की लहरें टकरातीं हैं । थोड़ी देर तक फिटन में जुते घोड़ों के टापों की आवाज धीमी पड़ कर आकाश में विलीन हो जाती है । धीरे धीरे शाहिदा अपनी मां की चारपाई के पास आकर ठिठक जाती है और कान लगाकर घोड़ों के टापों की आवाज सुनती है । यकायक शाहिदा की मां अंगड़ाई लेती है ।)

**शाहिदा की मा:**—बेटी, तुम रो रही हो, क्यों ? अब तो मैं अच्छी हो चली । अभी कुछ दिन तुम

से और खिदमत लूंगी । कौन जाने तुम्हारे हाथ पीले करने का मौका भी हाथ लगे । इनायत खां के आ जाने से बीमारी तो दूर हो ही गयी और चिन्ता का पहाड़ भी कुछ हल्का हो गया । इसकी वजह से संगदिल खान भी इन्सान बन गया । नहीं तो क्या वह अपने बेटे को यहाँ कदम रखने देता । की इजाजत काश, मैं अपनी ही जिन्दगी में तुम्हें खुशहाल देख पाती । या खुदा ! तू मेरी बच्ची पर रहम कर और.....

( शाहिदा खड़ी खड़ी अपनी अम्मा की बातें सुनती है और उसके दोनों नेत्रों से आंसुओं की धाराएं बह रही हैं । जुम्नन मियां को आते देखकर वह आंसू पोंछती है और अम्मा के पास बैठ जाती है । )

**जुम्नन मिया:-** ( आश्चर्य ) क्या हुआ बेटा ? तेरी अम्मा अब कैसी हैं ?

( शाहिदा सिसकने लगती है । )

**शाहिदा की मा:-** मैं तो अब अच्छी हो रही हूँ । पता नहीं इसे क्यों रुलाई आ रही है ? फिजूल फिक्र करती है । अभी मैं कुछ दिन और

तुम लोगों को तकलीफ देती रहूँगी  
और कौन जाने.....

( शाहिदा और जोर से सुसक्रियां लेती है । )

**जुम्मन मिया:-** तुम तो खामखा ऐसी बातों को छेड़  
कर लड़की को रुलाती हो । कौन जाने  
जल्दी ही शाहिदा को अच्छा घर और  
अच्छा वर मिल जाय ।

( इसी बीच शाहिदा उठकर घर के भीतर चली  
जाती है । )

**शाहिदा की मां:-**क्यों ? क्या कोई लड़का निगाह में है ?

**जुम्मन मिया:-**अभी तो नहीं, लेकिन होते देर नहीं । कौन  
जाने ?

**शाहिदा की मां:-**क्यों जी, यह लड़का क्या उसी खान के  
खानदान का है ?

**जुम्मन मियां:-**तुम खानदान की बात चलाती हो, यह उसी  
का इकलौता बेटा है । इन्सान की सूरत में  
फरिश्ता । कौन कह सकता है कि यह खान  
का बेटा है । दोनों में जमीन आसमान का  
फर्क है ।

शाहिदा की मां अपने आंसू पोंछती है और हसरत भरी  
निगाह से जुम्मन मियां की ओर डालती है । करीब बुला-  
कुछ कान में कहती है )

**जुम्मन मियां:-**शाहिदा की अम्मा ! अब मैं तुमसे क्या बयान करूँ ? इस बच्चे को धन, दौलत, सूरत सीरत और ऊँचे खान्दान का जरा भी गुमान नहीं । बड़े कालिज के आखिरी दर्जे में पहले नम्बर पर पास हुआ है । उसने सोने के दो तमगे हासिल किये हैं और सारे कालिज में इसका बोलबाला है । (शाहिदा खिड़की के पीछे से जुम्मन मियां को ध्यान से सुन रही है । उसके गुलाबी गालों पर गहरा सुर्ख रंग रह रह कर दौड़ जाता है । आशा और निराशा की लहरें उसके हृदय सागर में ज्वार-भाटा की तरह हलचल मचा रही हैं । )

**शाहिदा की मां:-**आखिर तुम्हें ये सब बातें आज कैसे और कहां से मालूम हुई ? कभी तुमने इसका जिक्र तक नहीं किया । मैं खान को हमेशा कोसती रही । खुदा करे मेरी बददुआ का असर इस हर दिल अजीज बच्चे पर न पड़े ।

**जुम्मन मियां:-**मुझे भी इन सब बातों का कहां पता था ? कल खान साहेब के खानसामे ने तफसील में इन बातों का जिक्र किया ।

**शाहिदा की मां:-**या खुदा ! यह बच्चा मेरी उम्र लेकर जिन्दा रहे । उस सूद खोर जालिम खान की बद-

नीयती की वजह से मैं उस खानदान को कोसती रही। खुदा करे इस मासूम बच्चे पर कोई असर न पड़े। या अल्लाह ! तू मुझे माफ कर।

( शाहिदा अभी भी खिड़की से छिपी हुई मां-बाप की बातें सुनती है। प्रसन्नता और आशंका की गहरी छाया अलग अलग बारी बारी से उनके चेहरे पर दिखाई पड़ती है। )

**जुम्मन मिया:-** शाहिदा की अम्मा ! बाप बेटे में जमीन आसमान का फर्क है। कहां गरीब रैयत को चूसने वाला और हर तरह से उसे तबाह करने वाला खान और कहां इन्सानियत की खिदमत करने वाला उसका इकलौता बेटा ?

**शाहिदा की मां:-** खुदा करे यह बच्चा बड़ी उम्र पाये। दिन दूनी और रात चौगुनी तरक्की करे और अपनी जिन्दगी में हमेशा खुशहाल रहे और मेरी.....।

**जुम्मन मिया:-** अल्ला ताला चाहे तो तुम्हारी दुआएं बर आये।

( जुम्मन हाथ उठाकर भगवान से दुआ मांगता है। शाहिदा अभी भी खिड़की से लगी हुई बातें सुन रही है। अब धीरे धीरे चेहरे पर इत्मिनान की झलक नजर आती है। वह भी हाथ उठा कर भगवान से दुआ मांगती है। )

शाहिदा की मां:-शाहिदा बेटी ! अंधेरा हो चला है, जरा चिराग तो रौशन कर दो । (शाहिदा जल्दी से खिड़की की ओट छोड़ घर के अन्दर जाती है और अपनी अम्मा को आवाज देती है ।)

शाहिदा :- आई अम्मा ! चिराग ही रौशन कर रही हूँ ।

जुमन मियाँ :-शाहिदा की मां ! इस साल शाहिदा के हाथ पीले करने ही हैं । अल्लाह रहम करे हम इस जिम्मेदारी को भी जल्दी ही पूरा कर सकें ।

शाहिदा की मां :-ज्योतिषी जी ने तो बहुत उम्मीद दिलाई है । उनका कहना है कि इस साल हमारे दरवाजे पर सजधज कर बारात आयेगी और शाहिदा की किस्मत का सितारा चमक उठेगा ।

( शाहिदा इन बातों को सुन कर शर्मा जाती है और ठिठकती है । वह कान लगा कर अपने वालिद का जवाब सुनने के लिए बेकरार है । )

जुमन मियाँ :-मैं भी तो उसी दिन के इन्तजार में अपनी जिन्दगी के दिन काट रहा हूँ । यह सब तो तकदीर पर मुनहसर है, शाहिदा की अम्मां !

(इसी बीच शाहिदा बानू अपने आंचल में चिराग छिपाये मंच पर दाखिल होती है।)

शाहिदा की मां:—तू आ गई बेटी ! आज तूने दिया बाती को देर कर दी।

शाहिदा:— हाँ ! कुछ देर तो हो ही गयी, अम्मा ! आप अब्बा से बात कर रही थीं, इसीसे मैं...  
(गाय-रंभाती है)

शाहिदा की मां :—अच्छा, अच्छा, मैं समझ गयी (प्रसन्न मुद्रा में कहती है) बेटी ! नन्दिनी के पास भी दिया जला देना नहीं तो वह रात में भड़केगी और तुम्हारे अब्बा को पास भी न फटकने देगी, दूध देना तो दूर रहा।

शाहिदा :— बहुत अच्छा अम्मा ! अभी अभी चिराग जलाये देती हूँ। आप आराम करें।  
(गाय हुँकारती है।)

शाहिदा की मां:—अभी आपने नन्दिनी को कुछ चारावारा दिया कि नहीं ? वह बेचारी चिल्ला रही है।

जुम्मन मियां :—अभी तक मौका ही कहाँ मिला ? अब उसी की खिदमत करने जा रहा हूँ। तुम्हारी आवाज सुन कर वह भी शिकायत करने लगी। (हँसता है)

शाहिदा की अम्मां :—अच्छा अब तुम जाओ, उसकी सेवा  
 करो । मैं आराम से सोऊँगी, मेरी चिन्ता  
 छोड़ो । मैं अब बिल्कुल अच्छी हो चुकी हूँ ।  
 ( जुम्मन अन्दर जाता है और शाहिदा की मां चदर ओढ़  
 कर सो जाती है । रोशनी कम हो जाती है । )  
 ( परदा धीरे धीरे बन्द होता है । )



## अंक २

\*

### दृश्य २

(अरुणोदय का समय है। पूर्व दिशा में लाली बिखर रही है बिहगावली चहक रही है। धीरे धीरे प्रकाश बढ़ रहा है, मरीजा एक पुराना कम्बल ओढ़े चारपाई पर लेटी है और रह रहकर करवटें बदलती है। इनायत का दिया हुआ बुशाला अच्छी तरह तहाकर अरगनी पर अन्य कपड़ों के साथ रक्खा हुआ है। छोटी चौकी पर एक गिलास पानी और नाश्ते की तश्तरी रक्खी है। छोटी तौलिया भी पास ही रक्खी है। हकीम की दी हुई पुड़िया खोलती हुई शाहिदा मकान के अन्दर आते हुये इनायतखाँ को देख कर झिझकती, अपने कपड़े संभालती, और सलाम करती है। इनायत खाँ को अपने मकान में आते देख शाहिदा का दिल बाग बाग हो जाता है। संकेतों द्वारा सलाम का सलाम। जवाब पाकर शाहिदा का दिल खिल उठता है पुरमाने सलाम का जवाब पाकर शाहिदा जरा शर्मा जाती है। लेकिन इनायत का स्वागत करते हुए उसे बैठ जाने का इशारा करती है और मोढ़ा पेश करती है।)

इनायत खां :—आदाबअर्ज अम्मां अब आपकी तबीयत कैसी है ?

शाहिदा की अम्मां :—जीते रहो बेटा! अल्लाह का शुक्र है । अब मेरी तबीयत ठीक हो रही है । तुम इसी वक्त आ गये ? शाहिदा ! छोटे सरकार को सलाम करो बेटा !

शाहिदा :— (अपनी बड़ी बड़ी आँखों में लज्जा छिपाये शाहिदा बड़े अदब से दुबारा सलाम करती है।)

इनायत खां :—आदाब अर्ज ! यह आप लोगों ने क्या किया ?

शाहिदा :— क्या मुझसे कुछ गलती हो गयी छोटे सरकार ?

इनायत खां :—जी हां, आपने बहुत बड़ी गलती की है । मेरे शाल को लपेट कर यों अरगनी पर रख छोड़ा है । अगर अम्मां को सरदी लग जाती और इनका मर्ज बढ़ जाता तो ?

(इनायत शाल को उतार कर मरीजा को ओढ़ाता है।)

शाहिदा की अम्मां :—माफ करो बेटे ! मैं इसे कहां तक इस्तेमाल करूँगी । हमें तो फटे पुराने कपड़ों में ही जिन्दगी गुजारनी है, यह तो.....

इनायत खां :—अम्मां ! मुझे तुमने गैर समझ रक्खा है क्या ? तुम इसे शौक से इस्तेमाल करो । इससे मुझे बहुत बड़ी खुशी हासिल होगी ? वरना.....

शाहिदा की अम्मां :—बेटे ! तुमने यों कह दिया समझो मैंने इसे इस्तेमाल ही कर लिया । अब मुझे और मजबूर न करो बेटे !

इनायत खां :—यह कह कर मुझे मत दुखाओ अम्मां ! बस इसे कबूल करो ।

(इनायत खां की शीरीनी जुबान और हलाबत भरे जुमलों को सुनकर शाहिदा खुशी में फूली नहीं समाती ।)

इसी बीच जनाब हकीम साहेब मय अपने कम्पाउण्डर के स्टेज पर दाखिल होते हैं । एक दो बार खांसते हैं और दाढ़ी पर हाथ फेरते हैं । शाहिदा और इनायत को बात चीत करते देख हकीम साहेब व्यंग्यपूर्ण संकेत करते हैं ।

इनायत खां :—आदाबअर्ज हकीम साहेब आइए !

हकीम साहेब :—जीते रहिये छोटे सरकार ! आखिर जुम्मन मियां कहां हैं ? आप अकेले खिदमत कर रहे हैं ।

(हकीम साहेब चुभता हुआ व्यंग्य करते हैं ।)

इनायत खां :—क्यों ? क्या फीस चाहिए हकीम साहेब ! तशरीफ रखिए । वह भी मिल जायेगी । (व्यंग्य पूर्ण वाक्य में इजहार करता है ।)

शाहिदा :-अब्बा ने मुझे फीस के रुपये दिये हैं । मैं अभी लाती हूँ ।

(वह उठकर मकान के अन्दर जाना चाहती है । )

हकीम साहेब:-नहीं, नहीं बेटी ! तुम परेशान न हो । मुझे दोनों दिनों की फीस मिल चुकी है और आइन्दा भी मिलती रहेगी, तुम.....

इनायत खां :-आप क्या फरमा रहे हैं ? हकीम साहेब ! आपको किसने फीस दी है ? भला मैं भी तो जान लूँ कि कौन आज कल भामा शाह पैदा हुआ है ।

हकीम साहेब:-एक ऐसे संग दिल इन्सान ने फीस चुकाई है कि आप एतवार भी नहीं कर सकते । और यही नहीं उसने वादा भी किया है कि जब तक मरीजा अच्छी न हो जाये, मैं रोजाना इसे देखने आऊँ और बराबर उस शख्स से फीस और दवा का दाम लेता रहूँ । आइन्दा मैं आप लोगों को परेशान न करूँगा वरना वह.....

( शाहिदा कुछ देर रुककर एक गिलास लाने के लिए अन्दर चली जाती है )

शाहिदा की अम्मां:-नहीं, नहीं हकीम साहेब ! ऐसा हरगिज़ न हो सकेगा । मुझे उस हैवान

की नियत बढ मालूम होती है । मैं अपनी इज्जत को किसी भी कीमत पर बेचना नहीं चाहती हूँ । हम गरीब जरूर हैं लेकिन हमें कोई चाँदी के टुकड़ों से खरीद नहीं सकता । इज्जत खोने से मुझे मौत बेहतर है ।

**हकीम साहेब:**—( यकायक बात बदल कर ) अच्छा ! अच्छा ! आपकी बात पर ही अमल किया जायेगा । शक करने की बात नहीं । मैं आप ही से फीस लूँगा जिससे आपको इत्मिनान रहे । ( इसी बीच जुम्मन मियां पीपे में घी और दवाओं की पुड़िया लिए दाखिल होते हैं । हकीम साहेब को सलाम करते हैं । )

**जुम्मन मियां:**—आपको यहीं से फीस मिलेगी हकीम साहेब । मैं दूसरों का यहसान लेना नहीं चाहता हूँ । मैं किसी तरह भी..... ।

**हकीम साहेब:**—मुझे हैरत होती है तुम लोगों की बातों को सुन कर जुम्मन मियां ! तुम्हारे सर पर हिमालय से भी वजनी जिम्मेदारी आन पड़ी है । क्वारी लड़की को ज्यादा दिन घर में रखना खान्दान की इज्जत पर बट्टा लगाना

है । कुछ इस मसले पर भी कभी सोचा है ?

(खिड़की की ओट से शाहिदा हकीम साहेब की बातें सुनती है, और अपने वालिद की हालत पर तरस खाती है )

**इनायत खां :—**हकीम साहेब ! इस जिम्मेदारी को निभाने में जुम्मन मियां किसी से पीछे न रहेंगे । आप फिक्र न करें । सब इन्तजाम ठीक है ।

**हकीम साहेब:—**शाबाश छोटे सरकार ! आपने तो जुम्मन मियां को.....।

( शाहिदा पर इन बातों का काफ़ी असर पड़ता है, वह वहां से चल देती है और घर के अन्दर चली जाती है । )

**शाहिदा की अम्मां :—**( चारपाई पर लेटी है ) अजी बात ही करते रहोगे कि हकीम साहेब से दवा भी बनवाओगे ।

**हकीम साहेब:—**ओफ़ ! ओफ़ ! मैं तो एक दम भूल ही गया । कहां से लाये हैं घी जुम्मन मियां ! जिसका लेप बनाया जायगा ?

**जुम्मन मियां :—**करोड़ीमल—बसन्तलाल के यहां से घी लाया हूँ, हकीम साहेब !

**हकीम साहेब:—**वल्ला ! किसका नाम लिया आपने सुबह सुबह ! वह तो इंसान की सूरत मैं शैतान है । बड़ा मक्कार और धोखेबाज है वह !

खुद कोने में बैठा माला जपता है और उसके कारिन्दे सीधे साधे खरीदारों को जाल में फंसाते रहते हैं। मिलावट के काम में वह कमाल हासिल कर चुका है। उसका घी भी काबिले एतबार नहीं जुम्मन मियां !

**इनायत खां :—**अगर ऐसी बात है तो मैं उसके सामान का मुआइना कराऊँगा और उसके काले कारनामों का उसे मजा चखाऊँगा।

(हकीम साहेब कह कहा लगाकर हँसते हैं।)

**हकीम साहेब:—**मुआइना करने वाले भी तो उसी चट्टे बट्टे के आदमी हैं। पिछले दिनों एक हजार रुपये जुर्माना दे चुका है। फिर भी वह अपनी जलील हरकतों से बाज नहीं आता। जुम्मन मियां उसकी दूकान का घी वापस कर आइए। मेरे पास यह दवा है, इसे आप इस्तेमाल करें और असली शहद में यह पुड़िया खिलाइए। खुदा ने चाहा तो दो दिन में सारी बीमारी रफ़ू चक्कर हो जायेगी। मुझे ठा० सुर्जन सिंह को देखने जाना है बनवीरपुर, मुझे देर हो रही है, सलाम !

**जुम्मन मियां:—**सलाम हकीम साहेब !

(हकीम साहेब इनायत खां को इशारे से अपने पास बुलाते हैं और कान में कुछ राज की बात बतलाते हैं। इनायतखां मुस्कराता है और हकीम साहेब के मुँह पर हाथ रखता है।)

**इनायत खां:—**(खूब हँसता है) अजी हकीम साहेब यह भी कोई कहने की बात है।

(जुम्मन मियां हकीम साहेब को पहुँचाने बाहर तक जाते हैं।)

**हकीम साहेब:—**छोटे सरकार ! मेरी बातों पर गौर कीजिएगा। मेरे बाल धूप में सफेद नहीं हुए हैं। बार बार मौका नहीं मिलता।

**इनायतखां:—**अच्छा ! अच्छा हकीम साहेब ! आपकी बातों पर ज़रूर गौर किया जायेगा।

**हकीम साहेब:—**हाँ, और भी सुनिए ! यह बात किसी पर जाहिर न होने पाये। नहीं तो आपके अब्बा.....।

**इनायत खा:—**(शाहिदा परदे की आड़ से सब कुछ सुनती है और उसके दिल में उम्मीद की कली खिल उठती है। जुम्मन मियां हकीम साहेब को पहुँचाने बाहर तक जाते हैं।)

**शाहिदा की मां:—**अरी बेटा शाहिदा ! छोटे सरकार को कुछ नाश्ता पानी भी करायेगी कि कल की तरह यों ही बैरंग भेज़ देगी

तुम मुझे इनायत कह कर पुकारो ।  
गर कहने वाले तो बहुत हैं ! इनायत  
माली तो तुम्हीं एक हो ।

बेटे तुम्हारी अम्मीजान कहां है ?  
उदास हो जाता है और आंखों के आंसू  
छिंता है ।)

हता है लेकिन जुबान नहीं खुलती ।)

(  
ब  
हैं  
ब  
ब  
म  
क  
अ  
अ  
कु  
ग  
ज  
श  
अ  
ब  
ग  
ह  
ह

ों बेटे तुम इतने गमगीन क्यों हो  
रुसी की याद आ गयी क्या ?

और प्रतिहिंसा पूर्ण भावना से) अम्मां !  
म चले तो मैं आजाद कश्मीर के  
टेरों को एक साथ मौत के घाट  
। जिन्होंने मेरी मां को मुझसे  
रया और मुझे यतीम बनाकर  
। ।

ने आंचल से आंसू पोछती हुई) वह  
लुटेरों के चंगुल में आ गयी ? तुम्हारे  
तन कहां थे ?

ो दर्दनाक कहानी है अम्मां ! तुम  
हो जाओ तो इस दर्दभरी कहानी  
सुनाऊंगा ।

(शाहिदा तश्तरी में हलुआ और एक गिलास पानी लाती है। नाश्ता एक छोटी सी चौकी पर रखकर दरवाजे से सटकर खड़ी हो जाती है। उसे उम्मीद है कि उसके हलुए की खूब तारीफ होगी। इसी वक्त जुम्मन मियां भी बाहर से आते हैं।)

इनायत खां:—क्या लजीज हलुआ बना है। जुम्मन मियां?  
(इसी बीच शाहिदा तौलिया लेकर दरवाजे पर आती है)

जुम्मन मियां:—बेटी ! छोटे सरकार को हलुआ बहुत पसन्द है और लाओ। तौलिए की जरूरत अभी नहीं।

इनायत खां :—बस बस ! मैं बहुत खा चुका हूँ। शुक्रिया आप तकलीफ न करें।

(शाहिदा इशारे से शुक्रिया कबूल करती है। और कृतज्ञतापूर्ण नेत्रों से इनायत को सस्नेह देखती है। चलते चलते इनायत अपनी शाल मरीजा को अच्छी तरह ओढ़ाता है और एक मीठी निगाह शाहिदा पर डालता है। अतृप्त नेत्रों से शाहिदा इनायत खां को देखती है और जुम्मन मियां इनायत के पीछे कुछ दूर चलते हैं। इसी बीच शाहिदा की अम्मां दोनों हाथ उठाकर खुदा से दुआ मांगती है और उसी के साथ शाहिदा के भी दोनों हाथ उठ जाते हैं।)

शाहिदा की मां:- या खुदा ! हमारे मुल्क हिन्दुस्तान में ऐसे ही इन्सान पैदा हों। यह बच्चा मेरी भी उन्नत लेकर खुशहाल जिन्दगी बिताये। या परवरदिगार मेरी दुआ कबूल कर !

## अंक ३

### दृश्य १

(खान साहेब की कोठी आज दुलहन बनी हुई है। रंगीन बल्बों की सतरंगी झालरें दिलकश नज्जारा पेश कर रही हैं। कहीं बिजली कौंध रही है और कहीं इन्द्र धनुषी वल्लरियां अपना रंग जमाये हुए हैं। श्वेत श्याम रतनार बल्बों पर थिरकती हुई विद्युत् छटा यत्र तत्र त्रिवेणी का मनोरम चित्र उपस्थित कर रही है। शहनाई पर मालकोश की मधुर रागिनी सारे आलम को मदहोश किए हुये है। अनोखी अगरबत्तियां भीनी भीनी खुशबू से सारा अहाता मुयत्तर कर रही हैं। सोने चांदी की चमकती कुर्सियां, बेशकीमती सोफे, मखमली फर्स पर ऐसी सजाई गई है कि निगाह जिधर ही जाती है वहीं ठिठक कर रह जाती है। बैठक की चारों दीवारें, हाथी दांतों, बारासिंगों, शेरों, चीतों और भालुओं के सिरों से खूब सजाई गई हैं और वे दीवारें दमकती तलवारों, दोनली बन्दूकों और बल्लमों से लैस भी हैं। एक ओर असंख्य उपहार सजाये गये हैं जिन्हें देख बड़े-बड़े रईसों की निगाहें चकाचौंध हो जाती हैं। आज खान साहेब की कोठी इन्द्रपुरी से होड़ ले रही है। क्यों न हो आज खान साहेब के इकलौते

बेटे का जन्म दिवस जो ठहरा। शाहनाई की मधुर ध्वनि सारी महफिल को मस्त किए है।)

(खान साहेब के दोस्त अहवाब तरह तरह के उपहार पेश करते हैं और खान साहेब को बधाई देते हैं। खान साहेब उपहार कबूल करते हुए शुक्रिया अदा करते हैं। आज बुद्धू मियां भी खूब सजे हैं। दाढ़ी मूँछों में विलायती खिजाब लगा है। वह चारों तरफ यूँ दौड़धूप कर रहे हैं, जिससे साबित होता है कि बुद्धू मियां के सिर पर सारी जिम्मेदारी लाद दी गयी है। धीरे-धीरे शहनाई तेज होती है और मस्ती का आलम अपने उरूज पर पहुँचता है।)

**बुद्धू मियां** :—बड़े सरकार ! हमारे छोटे सरकार अमीर, गरीब, छोटे बड़े सभी को बड़ी मुहब्बत की निगाह से देखते हैं। वह बड़े हरदिलअजीज हो गये हैं। कुर्ब-जवार के लोग इन पर निछावर हो रहे हैं। सभी उनको दुआएं दे रहे हैं। कई पीढ़ियों में यह दिन देखने को नसीब हुआ है खान साहेब !

**खान साहेब** :—बुद्धू मियां ! इस साल इनायत का जन्म दिवस इतने धूम धाम से मनाया जा रहा है। पता नहीं वह अगले साल कहाँ रहे। और उसकी साल गिरह कैसे और कहाँ मनायी जाये ? इसे खुदा जाने।

**बुद्धू मियां** :—क्यों सरकार ! क्या कोई नई बात पैदा हो गयी । मुझ नाचीज को क्यों महरूम रक्खा जाता है इन बातों से ! मानो मैं कोई गैर हूँ ।  
(बुद्धू मियां कुछ उदास हो जाते हैं)

**खान साहेब** :—नहीं नहीं बुद्धू मियां ! आप ऐसा क्यों कहते हैं ? बात यह है कि कभी इनायत फौज में नौकरी करना चाहता है और कभी वह विलायत जाने की बात सोचता है । पता नहीं वह कहां रहे, इस तारीख पर अगले साल ।

**बुद्धू मियां** :—जो कुछ भी हो खान साहेब । छोटे सरकार जहां कहीं भी रहेंगे वह खानदान का नाम रोशन करेंगे । जहां कहीं भी मौजूद होंगे इनका जन्म दिवस धूमधाम से मनाया जायेगा । आप जरा भी फिक्र न करें ।

**खान साहेब** :—हमें भी उससे यही उम्मीद है बुद्धू मियां । खुदा उसकी मदद करे । अच्छा अब तुम सब सामान ठीक करो । मैं और मेहमानों को देख आऊं ।

(खान साहेब मंच से उठकर अन्दर चले जाते हैं और बुद्धू मियां उपहार की वस्तुएँ तहा तहा कर रखते हैं । साथ ही वे हर चीज को देखकर खुशी का इजहार करते हैं ।

एक तरफ से खान साहेब मंच से घर के अन्दर जाते हैं और दूसरी ओर से इनायत खां, शाहिदा की मां, शाहिदा और जुम्न मियाँ के साथ मंच पर आता है।

बुद्धू मियां बड़ी सावधानी से सामान ठीक करते हैं और धीरे-धीरे गुनगुना रहे हैं। (सौ सौ साल गिरह मनाऊं तेरी मैं छोटे सरकार ?)

इनायत खां :—बुद्धू मियां ! मेहरबानी करके चाय का इन्तजाम कराइये। हमारे मेहमान तशरीफ ला रहे हैं।

बुद्धू मिया :—(बुद्धू मियां। यकायक गुनगुनाना बन्द करते हैं और सबको सलाम करके घर के अन्दर जाते हैं।) जो हुक्म छोटे सरकार ! भला आज मैं कैसे चूकूंगा। आज तो मैं बेहद खुश हूँ।

इनायत खां :—अम्मां। आज हमारे जन्म दिवस पर बुद्धू मियां को सबसे ज्यादा खुशी हासिल हुई है। यह बेचारे फूले नहीं समाते हैं।

शाहिदा की अम्मां :—क्यों न खुश हो बेटे। खुदा की मेहरबानी से ही ऐसे दिन देखने को मिलते हैं। खुदा करे तुम्हारे हजारों जन्म दिवस मनाये जायें।

(शाहिदा अपनी अम्मां की बात सुनकर बहुत खुश होती है और वह भी इशारे इशारे में खुदा से इबादत करती है।)

इनायत खां :—जब तक चाय आती है तब तक आप लोग इन तस्वीरों पर नजर दौड़ा लें। यह देखिये यह मेरी एन० सी० सी० की पूरी कम्पनी है और मैं चांसलर साहेब के बगल बैठा हूँ।

जुम्मन मियां:—क्यों छोटे सरकार। यह तमगा आपको कैसे मिला था ?

इनायत खां :—मैं अपनी कम्पनी में सर्वप्रथम आया था। इसीलिए चांसलर ने एक सोने का मिडिल इनाम फरमाया था।

(सब लोग बड़े शौक से फोटो देखते हैं। मौका पाकर शाहिदा उस फोटो को सीने से लगाती हैं )

इनायत खां :—और यह फोटो है मेरे डिप्लोमा का। शायद अगले साल मुझे तालीम के लिए जर्मनी जाना पड़े।

शाहिदा की मां:—क्यों बेटे। तुमने तो इतना पढ़ा लिखा है फिर जर्मनी क्यों जाना पड़ेगा ? अभी तो तुम्हारी.....

इनायत खां :—अम्मा। अभी असली तालीम बाकी है। जर्मनी में संस्कृत की विशेष शिक्षा (तालीम) दी जाती है। वहां के उस्तादों ने संस्कृत विद्या में बड़ी महारत हासिल की है।

(शाहिदा इन बातों को सुनकर भौचक्की रह जाती है। मानो वह ऐसी बातों को सुनने के लिए तैयार न थी। बुढ़ू मियाँ चाय की ट्रे सजा कर मंच पर हाजिर होते हैं। और शाहिदा को सीने से फोटो लगाये देखकर मुस्कराते हैं।)

**शाहिदा की मां:—**बेटे ! यह किसका फोटो है ? जिसे तुमने इतनी इज्जत बखशी है, जरा पर्दा उठाओ, मैं भी तो देखूँ ।

**इनायत खां:—** (थोड़ी देर स्तब्ध खड़ा रह जाता है ) अम्मां । यह एक ऐसा फोटो है, जो मुझे जान से ज्यादा प्यारा है । मैं इसकी हमेशा पूजा करता हूँ । मां के न रहने पर मेरी जिन्दगी का दारोमदार इसी फोटो पर ही है लेकिन आज मैं आप लोगों को इसे जरूर दिखलाऊंगा । यह है मेरी अम्मी जान का फोटो । मैं उनकी गोद में बैठा हुआ हूँ और वह मुझे प्यार कर रही हैं । मेरी प्यारी.....

(यह कहते कहते इनायत फफक फफक कर रोने लगता है । और उसका बोलना बन्द हो जाता है । )

**शाहिदा की मां:—**जरीना ! जरीना ! (कह धर चीख पड़ती है और इनायत को अपनी बाहों में भर लेती है) बेटे इनायत ! जरीना के न रहने पर

तुम्हारी मां मैं हूँ । शाहिदा और तुम मेरे लिए बराबर हो । हिम्मत मत छोड़ो बेटे ?

(इनायत और सभी भौचक्के हो जाते हैं । बुद्धू मियाँ की परेशानी बढ़ रही है । किसी की समझ में कोई बात नहीं आ रही है ।)

इनायत खां :—अम्मां । तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि मेरी मां का नाम जरीना था ?

शाहिदा की मां :—बेटे । तुम मुझसे पूछते हो कि मैं जरीना को कैसे जानती हूँ । वह मेरी सगी बहिन है । उसके साथ मैंने जिन्दगी के बीस साल बिताये हैं । काश उसका दीदार एक बार... सिर्फ एक बार.....

(इनायत खां शाहिदा की मां की गोद में सिमट जाता है और फूट फूट कर रोने लगता है । जुम्मन मियाँ, शाहिदा और बुद्धू मियाँ भी रोते हैं ।)

(खान साहेब का प्रवेश)

इनायत खां — तशरीफ लाइये मेरे अब्बाजान ! आप मेरी खालाजान हैं और यह हैं उनकी साहेबजादी शाहिदा बानू । जुम्मन मियाँ को तो आप जानते ही हैं । (बड़े अदब से शाहिदा और उसकी अम्मां झुककर सलाम करती हैं)

**खान साहेब:**—यह मैं क्या सुन रहा हूँ ? ऐसा मालूम होता है कि मैं कोई ख्वाब देख रहा हूँ । यहां कहां तुम्हारी खाला ? वह तो बेचारी १७ साल से लापता हैं । अगर मैं भूल नहीं रहा हूँ तो तुम्हारी मां उसे शमीमा कह कर याद करती थीं । अब तो ये बातें भूली-बिसरी कहानियां हो गयीं इनायत । उन्हें भूल जाने की कोशिश करो । (खान का गला भर आता है, रोने लगता है और सभी सिसकियां लेते हैं ।)

**शाहिदा की मां:**—मेरा ही नाम शमीमा है खान साहेब । जरीना और आपका रास्ता देखते देखते हमारी आंखें पथरा गईं, और आज खबर भी मिली तो जरीना की सिर्फ तस्वीर ही मिली ? (रोते रोते शमीमा की घिछी बंध जाती है । खान साहेब और उनके साथ के लोग भी रोने लगते हैं ।)

**खान साहेब :**—अब अफ़सोस करने से क्या फायदा ? मरते दम तक इंसान को उम्मीद करनी चाहिए । किसे गुमान था कि तुम इतने दिनों बाद फिर मिलोगी ? कौन जाने कभी उसका भी

दीदार नसीब हो । (खान की आंखों में आंसू छल-छला आते हैं । शमीमा अपने दायें बायें इनायत खाँ और शाहिदा को बैठाये प्यार कर रही है । रह रह कर उन्हें तश्कीन दे रही है । जुम्मन मियाँ और खान साहेब अफसोस कर रहे हैं और एक कोने में बुद्धू मियाँ गमगीन बैठे हुए हैं । शमीमा रह रह कर अपनी बहन जरीना का फोटो देखती और उसे अपने सीने से लगाती है ।)

**शमीमा:—**

या खुदा ! तू मेरी पुकार सुन ले । बस एक बार बहिन जरीना का दीदार करा दे । मैं तुम्हारी लाख लाख शुक्रिया अदा करूंगी ।

**खान साहेब:—** (खान साहेब अत्यन्त दुखी होकर मंच से चले जाते हैं और धीरे-धीरे सभी मंच छोड़ देते हैं । खान साहेब के पीछे सब चिन्तित चले जाते हैं ।)

(जरीना अपने दायें बायें इनायत और शाहिदा को लिये घर के अन्दर जाती है ।)

— दृश्य परिवर्तन

## अंक २

\*

### दृश्य २

(खान साहेब की चौपाल में सब लोग बैठे हैं और खानसामा बड़ी मुस्तैदी से चाय दे रहा है।)

**हकीम साहेब :—**क्यों मियां इनायत खां। तब तो आप मेरी खिल्ली उड़ाते थे। मैंने चेहरा देख कर बतला दिया था कि हो न हो यह मरीज़ा तुम्हारी.....

**इनायत खां:—**बस, बस, हकीम साहेब ! आप तो हमेशा बेसिर पैर की हांकते हैं। मेरी खाला को मेरी अम्मां करार दे रहे थे और अब्बाजान से फीस भी वसूल करने लगे थे। आप तो हकीम होने के साथ साथ मजूमी भी अब्बल दर्जे के निकले।

(सब कहकहा लगाकर हंसते और हकीम साहेब एक हल्की चपत इनायत खां के गाल पर रसीद करते हैं।)

हकीम साहेब:—बड़ा शरारती हो गया है तू।

चपरासी :— (दरवाजे पर दस्तक देता है। बुद्धू मियां दरवाजा खोलते हैं)

इनायत खां :—कौन ? तुम घनश्याम ! कैसे अच्छे मौके पर आये, आओ !

चपरासी :— (झुककर सलाम करता है और प्राक्टर का पत्र देता है)  
प्राक्टर साहेब ने आपको खत दिया है और खत का जवाब मांगा है। कमांडिंग को फोन पर आपकी रज़ामन्दी बतलाने वाले हैं।  
(इनायत खां खत पढ़ता है। वह हां करे या ना ? इनायत यही सोच ही रहा था कि खान ने पूछा।)

खान साहेब :—किसका खत है बेटे ! ज़रा जोर से पढ़ो। हम लोग भी कुछ सुनें।

(सब लोगों की तेज निगाहें इनायत खां पर टिकी हैं। शाहिदा की बेकरारी काफी बढ़ती जा रही है। वह समझती है कि कहीं जर्मनी जाने का परवाना तो नहीं आया ? खान सोचते हैं कि प्राक्टर ने बधाई भेजी होगी।)

इनायत खां:—अब्बाजान। यह हमारे यूनीवर्सिटी के प्राक्टर का खत है।

शाहिदा की मां :—क्या लिखा है खत में बेटा ? क्या उन्होंने भी तेरी सालगिरह पर तुम्हें बधाई भेजी है ?

इनायत खां :—नहीं खाला ! मुझे बधाई के साथ-साथ हुक्मनामा भी मिला है कि मैं तुरन्त लद्दाख जाकर अगले सप्ताह अपनी ड्यूटी पर हाजिर हो जाऊँ । मुझे मेजर जनरल शर्मा ने कैप्टेन के पद पर नियुक्त किया है । प्राक्टर साहेब ने यह भी लिखा है कि मैं अपनी रजामंदी घनश्याम के हाथ अभी भेज दूँ । उन्होंने यह भी इजहार किया है कि यह मुल्क की हिफाजत और इज्जत का सवाल है । आज हर एक नवजवान का फर्ज है कि वह ममता-माया त्याग कर इस सरजमीं की रक्षा के लिए मैदानेजंग में उतर पड़े । अब्बाजान ! आप भी इस बात से इत्तिफाक करेंगे कि इस मसले में दो रायें हो ही नहीं सकतीं ।

(पत्र सुनकर शाहिदा और शमीमा सिहर उठती हैं । सारा वातावरण भयावह दृष्टिगोचर होता है । सभी उपस्थित जन किंकर्त्तव्यविमूढ़ दिखाई पड़ते हैं । थोड़ी देर के लिए सन्नाटा छा जाता है, सभी लोग खान साहेब

की ओर उम्मीद लगाये देख रहे हैं। खान साहेब गलता-पेंचा खड़े रहते हैं। और वह शमीमा एवं शाहिदा की ओर सम्बेदना की दृष्टि से देखते हैं।)

**खान साहेब:—**इनायत बेटा ! इस खत के जवाब में तुम अभी अपनी मजबूरी जाहिर कर दो। हमें लड़ाई पर नहीं भेजना है, अपने इकलौते बेटे को। प्राक्टर साहेब भी.....

**इनायत खां :—**अब्बाजान ! आपका हुक्म सर आंखों पर लेकिन.....

**खान साहेब :—**लेकिन की बात छोड़ो। मैं तुम्हें खूंखार चीनियों की बेरहमी का शिकार नहीं होने दूंगा। उनके काले कारनामों को सुनकर पत्थर दिल इंसान भी काँप उठता है। और जरीना की नामौजूदगी में तुम्हीं तो मेरे बुढ़ापे का एक सहारा हो। मैं तुम्हें हरगिज मोर्चे पर नहीं जाने दूंगा। मेरे आगे पीछे है ही कौन। कोई और होता तो कुछ बात भी थी। आज ही प्राक्टर साहेब को जवाब भेज दो। मजबूरी है। वरना कौन पठान न चाहेगा कि उसका बेटा फौज का आला अफसर न बने। तुम खुद सोचो कि तुम्हारे

न रहने पर कौन है जिसे देखकर हम लोगों को तसकीन मिल सकेगी। अगर तुम मुझसे मोहब्बत करते हो तो तुम्हें फौजी अफसरी से मुंह मोड़ना पड़ेगा इनायत बेटे!

**शमीमा:—**

ठीक ही फरमा रहे हैं खान साहेब। अभी तो तुम्हारे खेलने खाने के दिन हैं। नौकरी चाकरी तो सारी जिन्दगी करनी ही है। और खुदा के फज्ल से तुम्हें किसी चीज की कमी भी तो नहीं है। फिर क्यों आफत...

**बुद्धू मियां:—**

यही तो मैं भी कहता हूँ छोटे सरकार। अभी से क्या जरूरत है कि आप मोर्चे पर जान देने जायें। अगर आप दो चार भाई होते तो कोई बात भी थी। आप तो अकेले...  
(इन दलीलों को सुनकर शाहिदा राहत की सांस लेती है। और उसे उम्मीद की एक किरन दिखाई पड़ती है। फिर भी वह इनायत खां के जबाब की मुन्तजिर है।)

**इनायत खां :—**आप लोग हमारे बुजुर्ग हैं जैसा फरमायेंगे मैं वैसा ही करूंगा। लेकिन आप लोगों से ज्यादा बुजुर्ग हैं हमारे बुड़े दादा जो आज १७ साल से आजाद काश्मीर के लुटेरों से जमकर मुकाबिला कर रहे हैं। अब उन्हें

चीनियों के जुल्म का शिकार होना पड़ रहा है। मेरे होने हुए यह नहीं हो सकता। उन्हें सुकून की जिन्दगी बिताने के लिए मैं अपनी जान पर खेलना चाहता हूँ। चीनी हमलावरों के चंगुल से अपने मादरे वतन को रिहा कराने के लिए मैंने पक्का इरादा कर लिया है, अब्बाजान !

(शाहिदा और शमीमा टकटकी लगाये इनायत खांको देख रही हैं। उसकी हिम्मत और बहादुराना बातें सुनकर शाहिदा अन्दर ही अन्दर खुश होती है।)

**खान साहेब:—**इनायत बेटा। मैं अपने बुजुर्गवार वालिद की खिदमत के लिए अकेला काफी हूँ। तुम अपनी खाला, खालू और शाहिदा के साथ यहीं जिन्दगी बसर करो। मेरी रगों में अभी भी गर्म खून है। मैं दुश्मनों के दाँत खट्टे कर दूँगा। जीते जी वालिद साहेब का बाल बांका न होने पायेगा। तुम बेफिक्र रहो। प्राक्टर साहेब को जवाब भेज दो।

(शाहिदा और उसकी माँ उत्सुकता से इनायत खां का चेहरा देखती हैं और जबाब की मुन्तज़िर हैं।)

**इनायत खां:—**अब्बाजान ! हमारे मादरे वतन में सिर्फ एक जईफ वालिद का सवाल नहीं है, सवाल

है भारत के बच्चे बच्चे का । आज हमारी भारत माता को वीर जवानों के खून की जरूरत है । चीनियों को उनकी बदनीयती का सबक सिखाना है । चीन जालिमाना ढंग से तिब्बतियों और सीमा निवासियों का कत्ले आम करा रहा है । वह हमारे प्यारे मुल्क को दबोचना चाहता है । ऐसी हालत में न हम लोग यहां तसकीन से रह सकेंगे और न आपके जईफ़् वालिद ही चैन की जिन्दगी बसर कर सकेंगे । इसलिए मुझे इजाजत दीजिए अब्बाजान !

**शमीमा :-** इनायत बेटा । हमारी सरकार चीनियों को खदेड़ने के लिए कुमुक पर कुमुक भेज रही है । फिर तुम क्यों आग में कूद रहे हो । अभी तो.....

**इनायत खां :-** खालाजान । आप ठीक ही फरमा रही हैं । लेकिन आज सरकार और जनता के बीच की खाई पट चुकी है । माना सरकार हर प्रकार के साधन इकट्ठा कर सकती है लेकिन जब तक खेतों में हमारे किसान, मिलों और कारखानों में हमारे मजदूर तथा युद्ध-क्षेत्र

में हमारे जवान खून पसीना एक न कर देंगे तब तक जीत हमसे यों ही दूर भागती रहेगी। वतन की हिफाजत के लिए देश के हर एक नवजवान को शहीद भी हो जाना पड़े तो बेहतर है। मुल्क की इज्जत के लिए हमें कुर्बानियां करनी पड़ेंगी। दगाबाज दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब देना होगा। जिन्दगी में बार बार ऐसे मौके नहीं आते। इतना ही नहीं, चीन को मुंह की खानी होगी और हिंद की महान विजय होगी। विजय होगी। वैसे तो अब्बा जैसा हुक्म देंगे वैसे ही किया जायेगा।

**खान साहेब :-** इनायत बेटा। तुम हुक्म देने की बात करते हो तो मेरी आंखों के सामने अंधेरा छा जाता है। माना मुल्क की तुम्हारी सख्त जरूरत है ! लेकिन अगर कहीं.....

**इनायत खां :-** लेकिन की बात जुबान पर न लायें अब्बा-जान ! मैं विजय का झण्डा लेकर लौटूंगा और अपने खानदान का नाम रोशन करूंगा। आप बिल्कुल चिन्ता न करें, मुझे हुक्म दें, अब्बाजान, हिन्द जिन्दाबाद !

खान साहेब :-इनायत । मैं तुम्हें गद्दार नहीं बनाना चाहता हूँ । आज भारत की इज्जत का सवाल है और तुम पर हुब्बेवतनी का शरूर सवार है । खुदा तुम्हारी मदद करे ।

(कहते कहते खान का गला भर आता है, वह रुमाल से चेहरा ढंक लेता है । )

इनायत खां :-खाला । अब आप लोग इसी मकान पर रहियेगा और अब्बाजान की हत्तुलइमकान खिदमत होनी चाहिए

(शाहिदा हर्ष और विषाद की लहरों में थपेड़े खा रही है ।)

खान साहेब :-मेरे लायक बेटे । तुम अब्बाजान की फिक्र मत करो । मैं सब प्रबन्ध कर लूंगा । मोर्चे पर खुदा तेरी निगहवानी करे । आज मैं अपने लखत जिगर को मुल्क की खिदमत में भेज रहा हूँ । ऐ मेरे परवरदिगार तू इनायत पर नजर रक्खे !

(इनायत खां सबको सलाम करता है और अपनी खाला और शाहिदा से कहता है । )

इनायत खां :-खाला । तुम और शाहिदा मेरे जवान भाइयों के लिए, स्वीटर, मोजे और दस्तानें बनाना । वहां बड़ी कड़ी सरदी पड़ती है ।

हम लोग तुम लोगों की चीजों को पाकर बेहद खुश होंगे और दुगुने जोश से मोर्चे पर जंग करेंगे ।

(जुदाई के समय सभी सिसकियां लेते हैं और खुदा से दुआ मांगते हैं ।)

सब:—

खुदा तुम्हारी हिफाजत करे ।

( इनायत खां को पहचाने सभी लोग जाते हैं । खान साहेब उसके सर पर अपना हाथ फेरते हैं । शाहिदा की आंखों में दो मोती दुरकते नजर आते हैं ।)

(उसी वक़्त जंगीसिंह रंगमंच पर प्रवेश कर फौजी सलामी देता है )

इनायत खां :—कौन भाई जंगी सिंह ! कहो कहां चले ?

जंगी सिंह :—मैंने सोचा कि लद्दाख में सलामी तो बाद में होगी । चलो यहीं कप्तान साहेब को सलूट दे आऊं और जन्म दिवस की मिठाई भी—

इनायत खां :—यहां कहां कप्तान और कर्नल बैठे हैं ? मैं तो तुम्हारा इनायत हूं ।

( जंगी सिंह सलूट करता है और इनायत खां सलूट लेता है ।)

जंगी सिंह —:क्यों मुझे चकमा दे रहे हो कप्तान बहादुर ।

यह देखो मुझे आर्डर मिला है कि मैं कप्तान इनायत खां को लद्दाख की छावनी पर रिपोर्ट करूं ।

(इनायत खां आर्डर पढ़ता है और मुस्कराता जाता है)

कप्तान इनायत खां :—हमारी हार्दिक बधाई मंजूर करो लेफटीनेण्ट जंगीसिंह । तुम आज डायरेक्ट कमीशन आफिसर नियुक्त हुए । बड़ी खुशी की बात है । दावत कब खाने को मिलेगी ।

जंगी सिंह :—सबसे पहले कप्तान बहादुर की ओर से डिनर और ऐटहोम होगा । फिर हम लोगों की बारी आयेगी । मेरी बधाई मन्जूर करो कैप्टन साहेब बहादुर !

कप्तान इनायत खां :—लेफटीनेण्ट जंगी सिंह ! मेरे नाम का कोई और इनायत खां होगा । जिसका जिक्र तुम्हारे आर्डर में है । उसी को ढूँढो लेफटीनेण्ट ! यो अपना वेशकीमती वक्त क्यों फजूल खर्च कर रहे हो ?

(व्यंग में कहता है।)

जंगी सिंह —:यह हरगिज़ नहीं हो सकता । । मैंने प्राक्टर से बातचीत कर ली है ।

कप्तान इनायत खां :—भाई जंगी सिंह । थोड़ी देर के लिए मान भी लूँ कि यह सच है तो भी मैं वहाँ जाकर आग में कूदना नहीं चाहता ।  
(व्यंग्यपूर्ण भाव से कहता है।)

जंगी सिंह :-आप नहीं जाना चाहते ? यह मैं क्या सुन रहा हूँ ? मोर्चे से विचलने की बात कप्तान इनायत खां, एक पठान के बेटे की जुबान से सुन रहा हूँ । तुमने खुद अपनी यूनिट के सारे जवानों से अहद कराया था कि मादरे वतन के लिए इस वक्त शहीद हो जाना बेहतर है, खासकर जब भारत मां की अस-मत पर धक्का लगने का सवाल पैदा है । अगर ऐसा न हुआ कप्तान तो हमारी यूनीवर्सिटी पर लानत है जिसने ऐसे एन० सी० सी० के जवान पैदा किये । इसके अलावा तुम्हारे कौम की बहादुरी और खुदारी हमेशा के लिए खत्म हो जायेगी और पठान कौम की तवारीख में कलंक के बेशुमार धब्बे नजर आयेंगे । तुम कायर कह-लाओगे और तुम्हारे खानदान पर गद्दारी की तोहमत लगायी जायगी, कप्तान बहादुर !

खान साहेब :-जंगी सिंह । बस आगे बात मत बढ़ाओ । एक पठान का बेटा अपने मुल्क की इज्जत के लिए बेमिसाल कुर्बानियां कर सकता है ।

इस लड़ाई की तवारीख में उसका नाम  
 सुनहले हुर्रुफों में लिखा जायेगा । इनायत  
 खां लाम पर जायेगा, जरूर जायेगा । और  
 तुम्हारे साथ आज ही मोर्चे पर जायेगा ।  
 खुदा तुम लोगों को फतेहआबी दे । मादरे  
 वतन का झण्डा तिब्बत और चीन पर लह-  
 राये । हिन्दुस्तान जिन्दाबाद ।

जंगी सिंह:— जिन्दाबाद !

सब:— जिन्दाबाद ।

(इनायत खां और जंगी सिंह दोनों गले मिलते हैं)

—पटाक्षेप

## अंक ४

\*

### दृश्य १

[लद्दाख क्षेत्र में भारतीय सैनिकों की एक टुकड़ी मुस्तैदी से ड्यूटी दे रही है। संतरी पहरा दे रहा है। सबेरे साढ़े पांच बजे तोपों और मशीनगनों की गड़गड़ाहट सुनायी पड़ती है। आश्चर्य चकित सन्तरी इधर-उधर तेजी से टहलता है। वह परेशान होकर कप्तान इनायत खाँ को बुलाता है। कप्तान के साथ कई फौजी जवान रंगमंच पर आते हैं। तोपों और मशीनगनों की गड़गड़ाहट बढ़ती ही जाती है। कप्तान इनायत फौजी जवानों की ड्यूटी लगाता है। रंगमंच के दाहिने ओर से दुश्मनों के आने का रास्ता है। इस दर्रे के दोनों ओर कप्तान अपने जवानों को ड्यूटी पर तैनात करता है। तोपों की फायरिंग और नजदीक आती जाती है।]

[कप्तान वायरलेस से बातचीत करता है और जवानीं को सचेत करता है।]

इनायत खां :—वीर जवानो ! शत्रु बड़ी संख्या में टिड्डी  
 (कप्तान) दल की भाँति मोर्चे पर आ गया है। यह  
 पहाड़ी हम लोगों को सुरक्षित रखने में किले  
 की भाँति हमदर्द होगी। वीरों ज्यों ज्यों शत्रु  
 सैनिक दर्रे से आगे कदम बढ़ायें त्यों त्यों  
 उन्हें मौत के घाट उतारना होगा। मैं लेफ्टी-  
 नेण्ट जंगी सिंह के साथ-साथ पुल पर डटा  
 रहूँगा।

जसवीर सिंह :—कैप्टेन साहेब ! पुल के पास कोई डिफेंस  
 (सूबेदार मेजर) की जगह नहीं है। आप सिर्फ दो अफसर  
 वहाँ क्या करेंगे ? दुर्घटना के समय हम  
 लोग आप तक पहुँच भी न पायेंगे, सहायता  
 करना तो दूर रहा। आप हम लोगों की  
 आखों के सामने रहें कप्तान साहेब।

इनायत खां :—वीर जवानों ! जब तक मेरी रगों में  
 (कप्तान) एक बूँद भी खून रहेगा, तब तक कोई भी  
 हमारा बाल बांका नहीं करसकेगा। चीनियों  
 को तो हम कुत्तों की मौत मारेंगे। तुम लोग  
 मुस्तैदी से अपनी अपनी पोजीशन पर जमे  
 रहो। आने दो चीनी दगाबाजों को हमारे  
 रेंज में, उन्हें मालूम हो जायेगा कि किस से  
 पाला पड़ा है। जयहिंद।

**जसवीर सिंह :—**जयहिंद !

(सूबेदार मेजर)

[कप्तान इनायत खां और लेफ्टीनेण्ट जंगीसिंह कुछे तार और इलेक्ट्रिक मशीन लेकर रंगमंच के बाहर जाते हैं।] मेजर चिन्तामग्न हो जाता है और अफसोस में हाथ मलता है परंतु कप्तान की आज्ञा के अनुसार वह अपनी पोजीशन पर पहुंचता है, अन्य सैनिक भी अपनी ड्यूटी पर पहुंचते हैं।]

[तोपों और मशीनगनों की गड़गड़ाहट और बढ़ती जाती है।]

**करामत सिंह :—**वीरों ! सावधान, शत्रु-दल आ पहुँचा है।

(हवलदार) अब फायर करना है "फायर"।

[फायर के आर्डर पर दर्रे के दोनों ओर से बन्दूकें छूटती हैं। ज्यों ज्यों चीनी दर्रे से गुजरते हैं त्यों त्यों उन्हें गोली से उड़ा दिया जाता है। कराहते हुए चीनी सिपाही धराशायी होते हैं। लाशों पर लाशें जमा होती हैं। धीरे धीरे बैण्ड की आवाज और बढ़ने लगती है और साथ ही चीनियों की असंख्य सेना आगे बढ़ने लगती है। ऐसा मालूम होता है कि मानो चीनी विजय डंका बजाते आगे बढ़ रहे हैं।]

**जसवीर सिंह :—**जवानों ! अभी तक कप्तान और लेफ्टीनेट

(सूबेदार मेजर) साहेब नजर नहीं आये। उन पर क्या बीतती

होगी भगवान जाने।

**करामत खां :—**हम तब तक अपनी पोजीशन नहीं छोड़ेंगे

(हवलदार) [जब तक हमारे इस शरीर में प्राण है और :

अपने कप्तान के आने तक उनका इन्तजार करेंगे। जब तक शरीर में एक बूंद रक्त बाकी रहेगा हम मोर्चे पर डटे रहेंगे।

**जसवीर सिंह** :—[उचक कर पुल की ओर देखता है] कहते तो (सूबेदार मेजर) तुम ठीक हो। लेकिन जरा पुल की ओर देखो। जहां कप्तान ने अपनी पोजीशन बनायी थी, वहां अब चीनी सेना का सागर उमड़ा आ रहा है। कौन जाने वे जिन्दा हैं भी या नहीं? पुल पार करने के बाद चीनी सेना हमारी चौकी पर कब्जा करेगी और साथ ही हमारा राशन, अस्लहा और अमुनीशन अपने कब्जे में कर लेंगी। फिर क्या होगा हवलदार!

**करामत खां** :—चिन्ता छोड़ो सूबेदार साहेब! अभी जान (हवलदार) बाकी है। मरते मरते हम सैकड़ों चीनियों को कब्र में दफना देंगे।

**जसवीर सिंह** :—इस तरह प्राण गंवाने से क्या लाभ? हमें (सूबेदार मेजर) अपने कमांडिंग को सूचना भी तो देनी होगी। चलो चलें। अभी भी मौका है हवलदार!

**करामत खां** :—ज़िन्दगी पर खेलकर अपनी ड्यूटी पूरी (हवलदार) करनी है। कप्तान इनायत खां अभी आते

ही होंगे। मौत को चुनौती देनी है मेजर जी  
 प्यारे हिन्दुस्तान के लिए जान कुर्बान करना  
 ही है। बार बार ऐसा मौका नहीं आता।  
 [यकायक पुल टूटने की आवाज सुनाई पड़ती है। यकायक  
 बंण्ड का बजना बन्द हो जाता है। बड़े घड़ाके की आवाज  
 आती है। चीनियों के चिल्लाने और कराहने की आवाज  
 सुनायी पड़ती है। दोनों अफसर खड़े होकर दृश्य देखते  
 हैं। उनके चेहरे खुशी से दमकने लगते हैं।]

**जसवीर सिंह:**— कप्तान इनायत खां ! जिन्दाबाद ! पुल  
 (सूबेदार मेजर) का उड़ाना उन्हीं का काम है। अब वे आते  
 ही होंगे। जरूर आते होंगे।

**करामत खां:**— अपनी जान पर खेलकर कप्तान ने यह अहम  
 (हवलदार) काम पूरा किया। भगवान् उनको सही  
 सलामत यहाँ तक पहुँचा दे।

[कप्तान इनायत खां जंगीसिंह के कंधे पर लदे हुए अपनी  
 चौकी की ओर आते हैं, दोनों अफसर दौड़कर कप्तान  
 को संभालते हैं। और मत्थे तथा आंख पर लगी चोटों पर  
 बंण्डेज बांधते हैं।]

**इनायत खां:**— शाबाश जवानों ! अब धोखेबाज  
 (कप्तान) चीनी समझ गया होगा कि हमारे सैनिक  
 कितने पानी में हैं। लेफ्टीनेण्ट जंगीसिंह एक  
 बहादुर फौजी अफसर और कुशल इंजीनियर  
 भी हैं। मैं इनका आभारी हूँ। इनकी

हिकमतअमली की बदौलत चीनी सेना खून की नदी में डूब उतरा रही है ।

जंगी सिंह :—अब हमें यहां समय बरबाद नहीं करना है ।  
(लेफ्टीनेन्ट) जवानों ! तुम लोग अपनी चौकी का सारा

राशन, सामान और अस्लहा बरबाद करके आगे बढ़ो । हम कप्तान को लेकर चलते हैं । यह जगह अब खतरे से खाली नहीं है । मौका हाथ से निकलने न पाये, अभी जाओ ।

[दोनों अपने अफिसरों को फौजी स्लूट देकर अपनी अपनी ड्यूटी पर चले जाते हैं । लेफ्टीनेन्ट जंगीसिंह कप्तान इनायत खां को सम्भाले हुए कंकरीली पथरीली, ऊँची नीची और ऊबड़ खाबड़ जमीन को पार करता हुआ आगे बढ़ता है । कभी-कभी खड़ा होकर दम मार लेता है ।]

इनायत खां :— भाई जंगीसिंह, ! तुम बहुत थक गये हो ।  
(कप्तान) ज़रा बैठकर आराम कर लो । अगर तुम भी चोट खा गये तो आगे बढ़ना मुमकिन नहीं, और कौन जाने.....

जंगी सिंह :—कप्तान साहेब ! यहां एक सेकेण्ड भी रुकना  
(लेफ्टीनेन्ट) खतरे से खाली नहीं । जहां तक दम में दम है हमारे कदम बढ़ते ही रहेंगे । दम टूटने पर कौन जाने क्या होता है ।

इनायत खां :— भाई जंगीसिंह ! तुमने तो दो दिन से खाना  
(कप्तान) भी नहीं खाया है । और नाम के लिए नींद

भी नहीं आयी है । कुछ देर तो आराम कर लो नहीं तो मुझे पहले तुम ही.....

जंगी सिंह :—कप्तान साहेब ! हम राजपूत की सन्तान हैं ।

(लेफ्टीनेण्ट) हमारे पिता विकराल शेरों के पंजों से गाय, नीलगाय और हिरन बचा लाते थे । तलवार की एक ही वार में शेर के दो टुकड़े कर देते थे । तो क्या मैं अपने आफिसरों को चीनी भेड़ियों के चंगुल से भी नहीं बचा सकता । उनकी क्या मजाल जो.....

इनायत खां :—मेरी तकदीर थी कि मुझे तुम जैसा जवां

(कप्तान) मद और बहादुर साथी आफिसर मिला । अब मुझे उम्मीद है कि मैं बखैरियत अपने वतन पहुँच जाऊँगा ।

[दोनों आफिसर थके माँदे आगे बढ़ते जा रहे हैं । यकायक जंगीसिंहकी ज़ुगाह एक टिमटिमाते हुए चिराग पर पड़ती है । वह उधर गौर से बेखर रहा है कि रास्ते में एक सांप फन फैलाये फुफकारता है ।]

जंगी सिंह :—[कप्तान को पीछे घसीटते हुए चिल्ला उठा ।]

(लेफ्टीनेण्ट) काला सांप !

[जंगीसिंह बिजली की तरह बन्दूक लेकर आगे लपकता है और टार्च की रोशनी डालकर अपनी बन्दूक के कुन्दे से सांप का काम तमाम करता है ।]

यह मरदूद भी चीनियों की भाँति मौत के मुँह में आ गया। इसी तरह चीनियों के फन भी कुचलने होंगे। वे भी क्या समझेंगे कि हिन्दुस्तान से दुश्मनी मोल ली है। हिंद की दुश्मनी उनके लिए बहुत मंहगी पड़ेगी कप्तान !

इनायत खां:— चीनी भी किसी अजदहे से कम नहीं।

(कप्तान) इसी सांप की तरह उन्हें भी ।.....

जंगी सिंह:— आप अच्छे हो जायें कप्तान साहेब ! चीनी

(लेफ्टीनेण्ट) अजगर का फन भी मैं इसी तरह कुचलवा दूँगा। वह भी क्या समझेंगे कि भारतीय सैनिकों से पाला पड़ा है।

[दोनों फिर चलते हैं]

इनायत खां:— जंगीसिंह ! आखिर तुम भी तो इंसान

(कप्तान) ही हो। तुम्हारी हड्डियां लोहे-पत्थर की तो हैं नहीं ! तो फिर क्यों इस तरह.....

जंगी सिंह:— कप्तान साहेब ! हम महाव्रती भीष्मपितामहा,

(लेफ्टीनेण्ट) अस्थिदानी दधीचि और गाण्डीवधारी अर्जुन की सन्तान हैं। हमें नश्वर शरीर से ममता नहीं। हमें तो अपना लक्ष्य पूरा करना ही है। आप इसी टीले पर आराम

करें। मैं नीचे घाटी से किसी डाक्टर को बुला लाता हूँ।

इनायत खां:— तुम ठीक ही कहते हो। मगर यहां (कप्तान) के अस्पतालों पर यकीन करना ठीक नहीं। यह क्षेत्र चीनियों के.....

जंगी सिंह:— आप अपने लेफ्टीनेंट पर विश्वास रखें। (लेफ्टीनेण्ट) और आप मुझे अभी हुक्म दें कप्तान साहेब।

इनायत खां:— बहुत अच्छा ! भाई जंगीसिंह ! (कप्तान) जैसा चाहो वैसा करो।

[जंगी स्लूट देकर चला जाता है और कप्तान अपने घर की बात सोचता है।]

(स्वगत) आज कई महीने बीतने को आये। लेकिन शाहिदा का अभी तक कोई पत्र नहीं आया। शायद उसकी शादी की बातचीत चल रही हो। मगर इसकी इत्तिला भी खाला मुझे भेजती। जो भी हो, मेरी गैरहाजिरी में वह अब्बाजान की देखभाल करती ही होगी। खाला के आ जाने से घर भरा पूरा लगता होगा। जुम्मन मियां और बुद्धू मियां दोनों अब्बाजान की दिलचस्पी कायम रखते होंगे ही। खुदा की मेहरबानी हुई तो मैं भी उन्हीं लोगों के साथ हँसी खुशी की जिन्दगी

बिताऊँगा । अब तो शाहिदा भी मेरे घर पर ही रहेगी, उसके साथ.....

(अस्पताल की एक नर्स का प्रवेश—)

[नर्स कुछ देर खड़ी-खड़ी कप्तान की आत्म-कहानी सुनती रहती है । साथ ही उसके चेहरे के उतार चढ़ाव से मालूम होता है कि जैसे वह भी कोई भूली विसरी कहानी याद कर रही है ।]

नर्स:— क्यों आप ही कप्तान इनायत खां हैं, जिसे लेफ्टीनेण्ट जंगीसिंह ने अब तक यहां सुरक्षित रक्खा है ?

इनायत खां:— जंगीसिंह कहां है ? तुम कौन हो ?  
(कप्तान) जंगीसिंह ! जंगीसिंह !

नर्स:— कप्तान ! तुम्हारी आवाज अब जंगीसिंह तक नहीं पहुँच सकेगी । वह मेरे साथ आने को तैयार था । लेकिन.....

इनायत खां:— [अपनी बन्दूक टटोलता है] मैं भी वहीं चलूँगा ।  
(कप्तान) वह अकेला चीनियों से लोहा नहीं ले सकता । बोलो वह कहां है ?

नर्स:— जरा मेरी बात भी सुनो ! मैं तुम्हारी मरहम पट्टी कर लूँ फिर जो कहोगे वही होगा । कौन जाने वह होश में आ गया हो और अस्पताल से अब आता ही हो । क्यों इतना....

**इनायत खां:—** तुम नर्स हो ? कृपा करके मुझे भी उसी अस्पताल में पहुँचा दो। मैं बगैर जंगी-सिंह के जीना नहीं चाहता। उसने ही मेरी जान बचाई। इतनी दूर तक वह मुझे अपने कन्धे पर ढोकर लाया है। मैं उसी के साथ चीनियों से खून का बदला खून से लूँगा। उनकी धज्जियाँ उड़वा दूँगा। लेफ्टीनेण्ट जंगी सिंह कहा हो ?

**नर्स:—** कप्तान ! तुम कैसे हिन्दुस्तानी बहादुर अफसर हो ? तुमने तो अपनी प्यारी माँ की ममता, पिता का प्यार, भाई-बहन का प्रेम और दोस्तों की मुहब्बत तर्क की है और मौत से मोर्चा ले रहे हो। फिर एक साथी के लिए इतना क्यों बेकरार हो रहे हो ? वह खुद यहां आने के लिए तड़प रहा होगा। उसने अपने प्राणों की बाजी लगाकर आपका साथ दिया है और देता रहेगा—

**नायत खां:—** क्या वह ठीक हो जायगा नर्स ?  
(कप्तान)

**नर्स:—** जरूर ठीक हो जायगा। तुम बेफिक्र रहो कप्तान !

**इनायत खां:—** मुझे जल्द ठीक कर दो नर्स ! मैं ही उसके पास चलूँगा।  
(कप्तान)

नर्स:— अच्छा देखा जायगा । पहले मुझे ड्रेसिंग तो कर लेने दीजिए कप्तान ! आप सीधे लेट जाइये ।

[नर्स मत्थे और आँख की पट्टी खोलती है और अपने बाक्स से दवा निकाल कर मत्थे और आँखों पर लगाती है । बैण्डेज करते समय कप्तान अपनी आँखों को खुला रखना चाहता है ।]

इनायत खां:— नर्स ! मेरी आँखों को खुला रखो ताकि मैं तुम्हें देख सकूँ नर्स !

नर्स:— कप्तान ! आँखें खुली नहीं रखी जा सकतीं । उनमें इतनी सूजन है कि तुम किसी को पाँच छे रोज तक देख नहीं सकते । सब्र करो, वह भी वक्त जरूर आयेगा । जब तुम मुझे ही नहीं बल्कि सबको देख सकोगे ।

[नर्स पट्टी बांधने के बाद इंजेक्शन की सुई तैयार करती है । कप्तान के बायें हाथ में लगाने के ह्याल से कमीज की बाँहें उलटती है और कुछ देर स्तब्ध रह जाती तथा तेजी से सुई फेंक देती है और जमीन पर बैठ कर वह सिसकी लेती है ।

स्वगत

या खुदा यह क्या माजरा है । मेरी आँखें मुझे धोखा तो नहीं दे रही है ।

इनायत खां:— नर्स ! नर्स ! क्या हुआ ? तुम सुई नहीं लगाती हो ?

[नर्स कोई जबाब नहीं देती। कुछ देर इबादत करती है]  
शुक्र है खुदा का

इनायत खां:— क्या बात है नर्स तुम चुप क्यों हो ? !  
(कप्तान) इंजेक्शन का दाम चाहिए ? यह लो दस  
रुपये का नोट। सुई लगाने में देरी मत  
करो ! बहुत खून निकल चुका है नर्स ! मेरे  
खून से धरती लाल हो गई है।

नर्स:— [अपनी द्यथा छिपाते हुए जबाब देती है, और उसकी आँखों  
से आँसुओं की झड़ी लगी रह जाती है।] कप्तान !  
यह सुई तुम्हारे लिए निकम्मी निकली।  
तुम्हारे लिए अब दूसरी सुई तैय्यार कर  
रही हूँ। मगर याद रखना, दवा देना, सुई  
लगाना और हर तरह की तीमारदारी  
करना मेरा ही काम होगा। किसी और को  
पास न फटकने देना। मैं तुम्हारा खून  
पहचान गयी हूँ। मैं जानती हूँ कि कौन सी  
सूइयां तुम्हारे माफिक होंगी और कौनसी  
नहीं !

इनायत खां:— नर्स ! मेरी आँखों में तो पट्टी बंधी  
(कप्तान) है। मैं कैसे जानूँगा कि तुम कौन हो ?  
और कहां हो ?

नर्स:— तुम इसकी चिन्ता मत करो ! मैं स्वयं तुम्हारे  
पास आ जाया करूँगी और तुम्हारे साथ

छाया की तरह हर वक्त रहूंगी। मैं अब जंगीसिंह के पास जा रही हूँ। देखू उसकी हालत कैसी है।

इनायत खां:— जरूर जाओ नर्स ! उसकी बदौलत  
(कप्तान) मुझे नयी जिन्दगी मिली है। उसे जल्द मेरी निगाह के सामने लाओ।

नर्स:— तुम इसी तरह यहां आराम से लेटे रहो। मैं जंगीसिंह को लेकर आती हूँ। भूल कर भी तुम अपनी पट्टी पर हाथ न लगाना कप्तान ! मैं जाती हूँ।

इनायत खां:— नहीं, मैं पट्टी पर हाथ नहीं लगाऊँगा !  
(कप्तान) तुम जाओ।

[नर्स कुछ दूर जाती है फिर लौट कर कप्तान को सस्नेह देखती है। रुकने की हिम्मत करती है क्योंकि कप्तान को एक सेकेण्ड के लिए भी वह छोड़ना नहीं चाहती। लेकिन जंगीसिंह की जान आरुत में है, इसलिए वहाँ से चल देती है। फिर भी मुड़-मुड़ कर देखती जाती है, जैसे गाय अपने बछड़े देखती है।]

इनायत खां:— (स्वगत) मुर्दा दिलों में जान डाल  
(कप्तान) देना, माता का दुलार, बहन का स्नेह-प्यार, धर्म पत्नी की भांति सुसेवा, मित्राणी की भांति सही राय देना, इन्हीं निश्छल नर्सों के

वश की बात है । असंख्य सद्गुणों का कितना सुन्दर सम्मिश्रण देखने को मिलता है, इन अस्पतालों की इन सेविकाओं में । धन्य है इनका त्यागमय जीवन और सद्सेवा की भावना ।

[नर्स के साथ जंगीसिंह का प्रवेश]

**जंगीसिंह:—** जयहिन्द कप्तान साहेब !

(लेफटीनेण्ट)

**इनायत खां:—** जयहिन्द लेफटीनेण्ट जंगीसिंह ! कहो ।

(कप्तान) अब कैसे हो ?

[कहते कहते आधा उठ बैठता है और जंगीसिंह को टटोल कर गले लगाता है]

**नर्स:—**

[कप्तान को आराम से लेटा देती है और जंगीसिंह को सचेत करती है]

जंगीसिंह ! अब बिल्कुल समय नहीं है । तुम अपना मिशन पूरा करो । नहीं तो, लेने के देने पड़ जायेगे । मैं यहीं कप्तान की सेवा में रहूँगी । तुम चिन्ता मत करना !

**जंगीसिंह:—** जयहिन्द कप्तान साहेब !

(लेफटीनेण्ट)

**इनायत खां:—** जयहिन्द ! तुम्हारा मार्ग मंगलमय हो,

.. (कप्तान) जंगीसिंह !

[नर्स कप्तान की पट्टी ठीक करती है। दूर बड़े जोर से धमाका होता है। तोपों के छूटने की आवाजें आती हैं। कप्तान चौकता है। नर्स उसे तसल्ली देती है।]

नर्स:—

तुम चिन्ता मत करो ! चीनी सैनिकों का खात्मा किया जा रहा है। जो सैनिक मोर्चे पर लड़ने के काबिल नहीं हैं उनकी परवरिश करना चीन सरकार फजूल समझती है इसलिए उन्हें यमपुरी पहुंचा रही है।

इनायत खाँ:—

(कप्तान)

बड़ी खूंखार है चीनी सरकार ! नर्स जी ! या खुदा ! कब खात्मा होगा इस जालिम...

नर्स:—

तुम क्यों परेशान होते हो ? तुम तो चंद दिनों में अपनी मां की गोद में पहुँच जाओगे। [मां की गोद ! मां की गोद ! को कप्तान डुहराता है]

इनायत खाँ:—

(कप्तान)

आपके खान्दान में कौन-कौन से लोग हैं नर्स ! तुम्हारे मालिक कहां हैं ? और वे क्या करते हैं ?

नर्स:—

इसे जानकर क्या करोगे कप्तान ! बड़ी दर्दनाक कहानी है मेरी। हम नर्सों की जिन्दगी तो मरीजों की दुनिया में ही बीतती है। वे ही हमारे सब कुछ हैं। बच्चों की मुहब्बत, भाई-बहिन का प्यार, खाविन्द और

सास-ससुर का प्रेम, इन्हीं मरीजों की सेवा में निछावर कर देना पड़ता है कप्तान ।

इनायत खां:— आपका काम तो बहुत पुनीत और (कप्तान) कल्याणकारी है । आप जन-सेवा के साथ ही साथ अपनी जीविका का भी इंतजाम रखती हैं । क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप पंजाब की रहनेवाली हैं क्या ?

नर्स:— [इस सवाल पर नर्स झिझकती है । परन्तु अपने पर जप्त रखकर जवाब देती है ।]

आपको कैसे मालूम हुआ कि मैं पंजाब की रहनेवाली हूँ कप्तान ?

इनायत खां:— आपके तर्ज गुफ्तगू और अपनी खाला (कप्तान) की आवाज से बिल्कुल मिलती जुलती आवाज सुनकर मुझे ऐसा लगता है कि आप भी पंजाब की ही रहनेवाली होंगी । खाला की तरह आपने भी शीरीनी जुबान पाई है ।

[इन बातों को सुनकर नर्स को चक्कर आने लगता है । पुरानी याददाश्तें ताजी हो आती हैं । सगी बहन के साथ उसका बचपन कितना सुखमय और सरल था । काश ! एक बार फिर उससे मुलाकात हो जाती । इन्हीं तमासबातों को सोचती हुई नर्स कुछ बेर तक गुमसुम बंठी रहती ।]

इनायत खां:— क्यों नर्स ? तुम जवाब क्यों नहीं देती ?  
(कप्तान) क्या मैंने कोई गलती की है ऐसे सवालात  
पूँछकर ?

नर्स:— नहीं, कप्तान साहेब ! आपके सवालात अपनी  
जगह पर बिल्कुल ठीक ही हैं । लेकिन इस  
समय उनका जवाब देना ठीक नहीं । अब  
तुम्हारे सोने का समय है । काफी फुरसत में  
मैं अपनी दुख भरी कहानी जरूर सुनाऊँगी  
और मैं तुम्हारी खाला से जरूर मिलना  
चाहूँगी ।

इनायत खां:— जरूर मिलिए आप उनसे । आपको  
(कप्तान) उनसे मिलकर बहुत खुशी होगी । मुझे तो  
वह अपने लड़के से भी ज्यादा मानती हैं ।  
वह मिल क्या गयीं, मानों मुझे मेरी प्यारी  
अम्मां ही मिल गयीं ।  
(स्वगत) “मुझे मेरी अम्मां मिल गयीं”

नर्स:— कप्तान के जुमले जुबान डुहराती है और इस जुमले को  
जुबान पर लाते ही उसकी आँखों से मोती झरने लगते  
हैं । वह स्नेहाश्रु पोंछती है ।  
(प्रकट) ! अच्छा ! अब तुम आराम करो ।  
फिर देखा जायेगा । काफी देर हो चुकी है ।  
—(दृश्य परिवर्तन)

## दृश्य २

[प्रातःकाल साढ़े पांच बजे भारतीय सेना उस क्षेत्र में पहुँच जाती है और अस्पताल के कर्मचारियों और खुफिया पुलिसों का काम करनेवाले लोगों को कैद कर लेती है। कुछ देर तक दूर गोलियां भी चलती हैं। कैदियों के नारे भी सुनाई पड़ते हैं। मशीन गनों और टैंकों की भयानक आवाजें भी सुनाई पड़ती हैं।]

[कप्तान इनायत खां चौक पड़ता है।]

नर्स:—

तुम आराम से सोये रहो। मैंने चीनियों और चीनियों की इमदाद पर पले तमाम हिन्दुस्तानी गद्दारों को नेस्त नाबूत करने की तरकीब दी है। आपका साथी लेफ्टी-नेन्ट जंगीसिंह उस तरकीब को अमली जामा पहना रहा है। वह अपने मिशन में काम-याब हो रहा है। अब तुम जरा भी फिक्र मत करो। वह अब आता ही होगा।

[धीरे-धीरे शोरगुल बन्द होता है और फायरिंग भी बन्द हो जाती है।]

इनायत खां:— इन गद्दारों और दरिन्दों के बीच तुम कैसे (कप्तान) जिन्दगी बसर करती रही, नर्स ?

नर्स:—

मजबूरन मुझे भी उन्हीं में शामिल होना पड़ा। हम लोगों को चन्द चांदी के टुकड़ों पर बिकना पड़ा और जो आनाकानी करता था वह खुले-

आम शूट कर दिया जाता था। लो !  
तुम्हारा बहादुर लेफ्टीनेंट अपने कर्नल के  
साथ आ रहा है।

इनायत खां:— [उचक कर बैठना चाहता है लेकिन नर्स उसे उसी तरह  
(कप्तान) फिर लेटा देती है]

कर्नल:— कप्तान इनायत खां ! अब तुम्हारी तबीयत  
कैसी है ?

इनायत खां:— [हाथ जोड़कर अभिनन्दन करता है] कर्नल साहेब  
(कप्तान) मैं आपकी आवाज पहचानता हूँ बैठिये !  
मैं अब ठीक हो रहा हूँ। यह सब इन्हीं  
(नर्स) की बदौलत है कर्नल साहेब !

कर्नल:— कप्तान इनायत खां ! मैंने भी इस नर्स की  
बहुत तारीफ सुनी है। हम इससे बहुत खुश  
हैं। इसे मन चाहा रैंक मिलेगा।

इनायत खां:— यह जानकर आपको बेहद खुशी होगी कि  
(कप्तान) मैंने और मेरे फौजी सिपाहियों ने लगभग  
तीन हजार चीनी सैनिकों को मौत के घाट  
उतार दिया। मुझे मिलाकर हमारे केवल  
दस जवान ही जखमी हुए हैं। हमने  
बेशुमार चीनी जवानों को चींटियों की तरह  
मसल डाला। अब वे लोग इधर मुड़कर  
देखने की भी जुरत न करेंगे कर्नल साहेब !

**कर्नल:—** तुम्हारी और तुम्हारी टुकड़ी की बहादुरी के कारनामों मुझे मिल चुके हैं। इसीलिए मैं तुमको बधाई देने आया हूँ। तुम्हारी आँख में चोट आयी थी। अब वह कैसी है?

**इनायत खां:—** कर्नल साहेब ! नर्स कहती हैं कि आँखें बच (कप्तान) गयी हैं। दर्द भी कम होता जा रहा है। सूजन ज्यादा हो गयी थी। वह भी धीरे-धीरे दूर हो रही है। तीन चार दिन के अन्दर ही अन्दर मेरी पट्टी खुल जायेगी। यह मेरी मां की मानिन्द-सेवा कर रही हैं। कर्नल !

**कर्नल:—** शरीफ इंसानों से अभी दुनियां खाली नहीं है, कप्तान ! मैं उसके बताये हुए तरीकों पर चलकर कामयाब हुआ हूँ। उनका सन्देश सुनकर मैं ताज्जुब में पड़ गया हूँ। हम खुद हैरान हैं कि उसने हम लोगों के साथ ऐसा गुडटर्न क्यों किया ? सारे के सारे गद्दार एक साथ रंगे हाथों पकड़े गये। सबके पास विषैली शीशियां और सिरिंजें पाई गईं जिनसे वे लोग हमारी सेना को...

**इनायत खां :—** [गम्भीर मुद्रा में कुछ सोचने लगता है और उसके कपोलों पर प्रेमाश्रु टपक पड़ते हैं।]

**कर्नल:-** क्यों कप्तान ! क्या सोचने लगे इस तरह ?

**इनायत खां:-** कर्नल साहेब ! यह नर्स मेरे लिए देवी के रूप में मुझे यहां मिली । अस्पतालवालों को कूटनीति से भुलावा देकर मुझे यहां न रखती और लेफटीनेंट जंगीसिंह को आपके पास न भेजती तो हम लोग भी जहरीली सुइयों के शिकार हो गये होते ?

**कर्नल:-** हम उससे मिलना चाहते हैं । वह बेहतरीन नर्स है । और उससे भी ऊँचे दर्जे की एक हिन्दुस्तानी वीराङ्गना ! उसका त्याग.....

**इनायत खां:-** [कप्तान को नाश्ता लेकर नर्स आ रही है । कप्तान उसके पदचापको सुनकर कहता है] उधर देखिए कर्नल साहेब ! वह देवी इधर ही आ रही है ।

**कर्नल:-** मैं तुमसे बहुत खुश हूँ नर्स ! तुमने हमारे कप्तान और लेफटीनेंट की जान बचायी है । हम तुम्हारे काम से बहुत खुश हैं । बोलो ! तुम्हें क्या चाहिए ? हम उसे पूरा करेंगे । जरूर पूरा करेंगे ! तुम अपनी जुबान से...

**नर्स:-** मैं यहां की जिन्दगी से बहुत ऊब चुकी हूँ । अब मैं चीनियों के चंगुल से रिहा होना चाहती हूँ । इसी मरीज की सेवा करते करते मैं अपने प्यारे देश को जाना चाहती हूँ ।

**कर्नल:—** मैं कप्तान इनायत खां को लखनऊ के मिलिट्री अस्पतालमें भेजना चाहता हूँ। वहाँ; नर्स हैं। अगर तुम चाहो तो यहां से सीधे अपने घर भी जा सकती हो।

**नर्स:—** नहीं, नहीं, कर्नल साहेब ! जब तक यह मरीज बिल्कुल ठीक नहीं हो जायेगा तब तक मैं अपने घर नहीं जाऊँगी। ऐसा मैंने अहद कर लिया है। मेरी जिन्दगी.....

**कर्नल:—** शाबाश नर्स ! ऐसा ही होगा। लेफटीनेंट जंगीसिंह !, कप्तान इनायत खां के साथ यह नर्स भी आज ही हवाई जहाज से लखनऊ जायेगी। वहाँ से इसको घर भेजने का पक्का इंतजाम कर देना होगा।

**जंगीसिंह:—** बहुत अच्छा। कर्नल साहेब ! ऐसा ही होगा [स्टूल देता है]

**कर्नल:—** अब हम जाते हैं। मैंने जैसा तुमसे कहा है। वैसा ही होना चाहिए लेफटीनेण्ट ! जयहिंद।

**जंगीसिंह:—** जयहिंद ! (कर्नल के साथ कुछ दूर जाता है)  
(हवाई जहाज के आने की आवाज तेज होती जाती है)

**नर्स:—** [खुदा से दुआ मांगती है। और घुटने टेक कर इबादत करती है और इनायत खां को सस्नेह देखती है।]

पटाक्षेप

## अंक ५

\*

### दृश्य १

[प्रातः काल का समय है। ऊषा की लालिमा धीरे-धीरे मिट रही है। सूर्य देव की सुनहली किरणों बिखरने ही वाली हैं। चिड़ियों का कलरव मन्द पड़ रहा है। कुक्कुट की ध्वनि यत्र तत्र सुनाई पड़ रही है। ऐसे सन्नाटे को चीरता हुआ अखबार वाला आवाज लगाता है।]

हाकर:—

मोर्चे की ताजी खबरें पढ़िए ! कप्तान इनायत खां लद्दाख के मोर्चे से फौजी अस्पताल में लाए गये हैं। वहां उनकी चिकित्सा हो रही है। ताजी खबरें ! ताजी खबरें ! .....मोर्चे की ताजी खबरें पढ़िए !

[फौजी अस्पताल में कप्तान की नर्सिंग हो रही है। नर्सिंग का सारा सामान एक छोटी टेबिल पर सजा हुआ है। नर्स

बड़ी मुस्तैदी से दत्तचित्त होकर नर्सिंग कर रही है। वह अपनी ड्यूटी में खोई हुई है। सारे शरीर का स्पंज करते समय वह एक पार्टिशन लगाती है। कप्तान के कपड़े बदलवा कर पार्टिशन हटाकर किनारे रख देती है ]

इनायत खां :—नर्स जी ! तुम तो मेरी माँ की तरह मेरी सेवा कर रही हो। काश मेरी अम्मी जान यहां होती तो आपको..... [कप्तान का गला भर आता है और वह सुबकियां लेता है। नर्स भी रोआंसी दिखाई पड़ती है। उसके गालों पर मोती दुरते दिखाई पड़ते हैं लेकिन अपने को काबू में रखकर वह कप्तान को धीरज दिलाती है ]

नर्स:— तो क्या हुआ कप्तान ! यहाँ तुम मुझे ही.....  
(इतना कहते कहते नर्स रुक जाती है।)

इनायत खां :—[इनायत खां चारपाई पर उठ बैठता है और चौंककर  
(कप्तान) पूँछता है।]

आप रुक क्यों गयी नर्स जी। कुछ बोलिए न!

नर्स:— कप्तान बहादुर ! यही कि हम नर्स मरीज को अपना सगा सम्बन्धी समझ कर सेवा करती हैं। चाहे वह हमें मां समझे या बहन। हर तरह की खुद गरजी बालायेताक रख कर हम मरीज की खिदमत करती हैं। यह मरीज पर मुनहसर है कि वह हमें किस निगाह से देखता है। हमें तो तमाम...

इनायत खां:- नर्स जी ऐसा कौन नाशुक्रा इन्सान होगा....

(कप्तान)

नर्स:-

कप्तान साहेब बहादुर ! आप और ज्यादा अपने दिमाग पर जोर न डालिए ! जरा आराम कर लीजिए । मैं आपके लिए नाश्ता लाने जा रही हूँ । क्या गजब किया मैंने बातों बातों में कप्तान ! काफी देर हो गयी है ।  
[नर्स दो चार कदम चलती है और फिर मुड़कर कप्तान से बड़ी मीठी जुबान में पूछती है ।]

नाश्ते में आज क्या पसन्द करोगे कप्तान ?  
मक्खन, पाव रोटी, सैण्ड विचेज या और....

इनायत खां:- मुझे आप के हाथ का सब कुछ पसन्द है नर्स जी ! जब आपने मुझे मां की मुहब्बत बखशी है तो फिर और क्या बाकी रहा । आप कुछ भी लाइए मेरे लिए अमृत होगा ।

(कप्तान)

नर्स:-

[नर्स कप्तान के मत्थे पर हाथ फेरती है और प्यार करते करते रुक जाती है]

आदमी को इन्सान होना मुयस्सर नहीं कप्तान । तुम जरा आराम करो, मैं अभी आती हूँ । नाश्ते के लिए बेवक्त.....

[नर्स कप्तान को सस्नेह देखकर चली जाती है और कप्तान सोचता है]

**इनायत खां:-** [स्वगत] इस देवी का जीवन कितना पवित्र है। इसके उच्च विचार अनुकरणीय हैं। क्या सम्भव हो सकता है कि यहां.....

[कप्तान की बातें सुनकर कम्पाउण्डर जवाब देता है। लुकछिप कर वह कभी कभी दोनों की बातें सुनता हैं।]

**कम्पाउण्डर:-** क्यों नहीं कप्तान साहेब। यहां हर तरह की दवाइयां मिल सकती हैं। सिर्फ आपके हुकम की देरी है। सर्जन साहेब की आज्ञा है कि आपके लिए सब औषधियां एकत्र की जायें।

**इनायत खां:-** कौन ? कम्पाउण्डर साहेब ? आप तशरीफ ले जायें नहीं तो नर्स जी बुरा मान जायेंगी और मैं आराम भी करना चाहता हूं।  
[कम्बल ओढ़ता है]

**कम्पाउण्डर:-** बहुत अच्छा साहेब ! मुँह बिचका कर और मत्थे पर हाथ रखे हुए कम्पाउण्डर बाहर जाता है और (मुँह पर उंगली रखकर चुप रहने का इशारा करता है।)

[इसी बीच खान साहेब अपने साथ हकीम साहेब, जुम्मन मियां, शाहिदा की अम्मां, शाहिदा और बुद्धू मियां को लेकर अस्पताल में दाखिल होते हैं। सब के चेहरे पर परेशानी और बेसब्री टपक रही है। कम्पाउण्डर को इशारे से खान अपने पास बुलाते हैं। कम्पाउण्डर भी इशारे

ही इशारे में बातें करता है। उसे खौफ ने आ दबोचा है फिर भी वह धीरे-धीरे खान के पास आता है]

**खान साहेब:-** कम्पाउण्डर साहेब। एक फौजी कप्तान जो लहाख से यहां लाए गये हैं उनसे हम मिलना चाहते हैं। क्या इजाजत मिल सकती है ?

**कम्पाउण्डर:-** धीरे बोलिए। कप्तान की कहीं आंख न खुल जाये वरना लेने के देने पड़ जायेंगे। कप्तान तो फिर भी गनीमत है उसकी नर्स का पारा तो हमेशा गर्म रहता है। मोर्चे पर से वह साथ-साथ आई है गोया यहां कोई नर्सिंग जानता ही नहीं। वह बड़ी सख्त है। इन्सान तो दूर रहा, यहां मक्खी भी पर नहीं मार सकती। किस की हिम्मत है जो भिड़ के छत्ते में हाथ डाले। आप लोग फ्रजूल.....

**खान साहेब:-** कम्पाउण्डर साहेब। मैं उसी कप्तान का वालिद हूं और ये लोग हमारे खानदान के हैं। हम लोग जल्द से जल्द उसका दीदार चाहते हैं। वह बेचारा मां की मुहब्बत से अब तक महरूम रहा है। हम लोग ही उसके सब कुछ हैं। कोशिश कीजिए कम्पाउण्डर साहेब। बड़ी मेहरबानी होगी आपकी।

[कम्पाउण्डर बड़े गौर से सब को देखता है। और अपने को आफत में डालकर आगे बढ़ना चाहता है। उन लोगों पर फिर एक नजर दौड़ाता है। शाहिदा को देखकर वह तरस खाता है। और धीरे धीरे आगे कदम बढ़ाता है।]

**खान साहेब:-** यह उसकी खाला हैं और यह हैं उनके खालू जान। शाहिदा उसकी खालाजान बहन है। और आप हैं बुद्धू मियां जिन्होंने उसे बचपन से मां की तरह पाला है। हम सब उससे मिलने के लिए बेकरार हैं। साहेब !

**कम्पाउण्डर:-** आप लोग जरा देर यहां रुके मैं.....

[सब की आंखों से आंसू टपक रहे हैं। खान साहेब अपने रुमाल से आंसू पोछते हैं।]

[कम्पाउण्डर धीरे धीरे कदम बढ़ाता है और जब उसे मालूम हो जाता है कि नर्स उसके पास नहीं है तो वह खान और उनके सम्बन्धियों को अन्दर जाने का इशारा करता है और खुद बाहर चला जाता है।]

[शाहिदा, शमीमा और बुद्धू मियां चारपाई के दूसरी ओर खड़े हो जाते हैं। हकीम साहेब और जुम्नन मियां पायताने की ओर खड़े हो जाते हैं और खान साहेब इनायत खां के सिरहाने खड़े हो जाते हैं।]

[कप्तान इनायत को कुछ आहट मालूम होती है, वह करवट बदलते हुए कहता है]

**इनायत खां:-** कौन ? नर्स जी ! आप बहुत शीघ्र लौट  
(कप्तान) आयीं ? क्या नाश्ता तैयार कर लिया  
आपने इतने थोड़े समय में ?

खान साहेब:— इनायत बेटा ! यह तो मैं हूँ । अब कैसी है तुम्हारी तबीयत ?

इनायत खां :— (दोनों हाथ बढ़ाता है) अब्बाजान आप ? सलाम (कप्तान) कुबूल हो । आपकी दुआ से अब मेरी हालत बहुत बेहतर है । मेरी खाला कैसी हैं ? शाहिदा तो खैरियत से हैं न ? खालू साहब और बुद्धूमियां बखैरियत तो हैं न ?

[ज्यों ज्यों कप्तान लोगों के नाम लेता है त्यों त्यों लोगों के चेहरों की रंगत बदलती जाती है । सभी रुमाल से अपने आंसू पोछते हैं ।]

[आगे बढ़कर खान, कप्तान इनायत खां को गले लगाता है]

खान साहेब:— सभी लोग बखैरियत हैं । तुम्हें देखने के लिए सभी यहां आये हैं । बेटे ।

[कप्तान सब को सलाम करता है और हाथ मिलाता है । शमीमा बलाइयां लेती हैं । और उसके चेहरे पर हाथ फेरती है । शाहिदा इनायत के सर पर अपनी उंगलियां फेरती है । बुद्धू मियां चारपाई के पास बैठकर कप्तान के पैर पर हाथ फेरते हैं ।]

कप्तान:— कौन बुद्धूमियां ? आप भी आये हैं ।

बुद्धू मियां:— सलाम कुबूल हो । कैसी तबीयत है आपकी ? [बुद्धूमियां रुमाल से प्रेमाश्रु पोछते जाते हैं और एक हाथ से कप्तान का पैर सहला रहे हैं]

जब आप का दीदार हो गया तो सब खैरियत ही खैरियत है छोटे सरकार ! अब आप अपनी खैरियत बतलाइए ।

**इनायत खां :**—आप लोग यह सुनकर खुश होंगे कि हमारी (कप्तान) कम्पनी के बहादुर जवानों ने धोखेबाज चीनियों के दांत खट्टे कर दिए और पुल उड़ाकर दगाबाज दुश्मनों की पूरी कम्पनी जहन्नुम में पहुँचा दी । चीनियों के पैर उखड़ गये । तब उन लोगों ने खौफ के मारे एकतरफा लड़ाई बन्द कर दी और पीठ दिखाकर उलटे पांव भाग खड़े हुए । अब भूल कर भी वे बदजात भारत की ओर रुख न करेंगे । अब्बाजान !

**खान साहेब:**—शाबाश बेटे ! शाबाश ! तुमने मेरी मुरादें पूरी की हैं । हिन्दुस्तानी सिपाहियों ने हमेशा मोर्चों पर नाम कमाया है । यह खुश खबरी सुनकर मेरे अब्बाजान बाग बाग हो जायेंगे ।

**शमीमा:**—इनायत बेटे ! तुमने सारे पठान खानदान का नाम रौशन किया है और मादरे वतन की डूबती किशती बचा ली है । खुदा ! तुम्हें लम्बी उम्र बख्शे !

**हकीम साहेबः—**छोटे सरकार ! आप यह तो बतायें कि यह नर्स कहां से तुम्हारे पल्ले पड़ी, जिसका दिल पत्थर का है ? जो हम लोगों को भी तुम्हारी मुलाकात से महरूम रखना चाहती है । ऐसी सख्ती भी किस काम की ?

**इनायत खांः—** हकीम साहेब ! अगर यह नर्स मोर्चे पर  
(कप्तान) हम लोगों को न मिल गयी होती तो आप लोगों को हमारी लाशें भी देखने को न मिलतीं । आप लोग इनका शुक्रिया अदा करें । मैं तो ताजिन्दगी इनका शुक्रगुजार रहूंगा । किसी बहुत बड़े शरीफ खानदान की हैं । अजहद मजबूरी में इन्होंने यह पेश इख्तियार किया । वह बेचारी हर तरह से मजबूर थीं । खूंखार चीनियों के हाथ वह गाय-बकरी की तरह बेच दी गयी थीं । फिर भी उनके दिल के कोने-कोने में हिन्दु-स्तान की मुहब्बत महफूज बनी रही ।

**खान साहेबः—**आखिर वह इस वक्त कहां गयी हैं ? उनका मरीज इतनी देर अकेला क्यों है ?

**इनायत खांः—**नर्स जी ! ओ नर्स जी ! आप इधर तशरीफ लाइए । मेरे अब्बा बड़ी बेकरारी से आपका

(कप्तान)

इन्तजार कर रहे हैं। और मेरी खाला और खालूजान भी। मेरी आंखें खोलिए ताकि मुझे मौका मिले कि मैं अपने अब्बाजान वगैरह का दीदार कर सकूँ।

[नर्स दबे पांव सिर झुकाये पाटीशन रूक जाती है। जरा देर रुकती है और अपना रुमाल निकाल कर आंसू पोछती है। हिम्मत करके आगे कदम बढ़ाती है। वह लम्बी-लम्बी सांसें लेती है। उसके सारे शरीर में कम्पन और सिहरन दिखाई पड़ती है।]

[उसके गुलाबी कपोलों पर स्वच्छ मोती टुलकते नजर आते हैं]

**शमीमा:—** (आश्चर्य में) जरीना। बहन जरीना।  
(दोनों बहनें एक दूसरे से लिपट कर सुबकियां लेती हैं।]

**खान साहेब:—**(हर्ष और आश्चर्य में) जरीना! तुम्हीं नर्स हो? या खुदावन्द करीम! तुमने मेरी उजड़ी दुनिया बसा दी। [वह अपने दोनों हाथों को उठाकर दुआ मांगता है। कुरान की आयतें पढ़ता है।]

**इनायत खां:—**अम्मां! मेरी आंखें खोलो। मैं तुम्हें देखना  
(कप्तान) चाहता हूँ। खोलो मेरी आंखें अम्मां! मैं तड़प रहा हूँ तुम्हें देखने के लिए। आंखें खोलो मेरी प्यारी अम्मां! .....

[शमीमा और जरीना एक दूसरे से गले मिलती हैं]  
शाहिदा ! तुम्हीं मेरी आंखें खोल दो खुदा  
के लिए । जल्दी करो शाहिदा !

[शाहिदा अपना नाम सुनकर खुशी से फूली नहीं समाती  
है । वह कप्तान के करीब धीरे धीरे जाती है]

जरीना:—

ठहरो बेटी ! मैं ही खोले देती हूँ ! [कप्तान

के गालों पर हाथ फेरती हुई जरीना कप्तान से कहती है]

मेरे प्यारे बेटे ! जिस नर्स ने मोर्चे पर पट्टी

बांधी थी वही नर्स आज तुम्हारी पट्टी

खोलेगी । जरा देर और सब्र करो । [जरीना

शाहिदा को चुमकारती है और उसे गले लगा लेती है ।

उसे कप्तान के और नजदीक ले जाती है । उसे पट्टी

खोलने का तरीका बतलाती हुई पट्टी खोलती है]

कप्तान:—

(आंखों के खुलते ही) अम्मां ! प्यारी अम्मां !

जरीना:—

मेरे दिल के टुकड़े इनायत ! मेरे लखत

जिगर ! कप्तान !

[वह कप्तान को अपनी छाती में लगा लेती है और

उसके बाद कप्तान अपनी खाला की गोद में और शाहिदा

जरीना की गोद में दिखाई देती है]

खान साहेब:—

बेटे इनायत ! अपने खालू जान से तो  
मिलो !

[कप्तान बारी-बारी से सभी लोगों से मिलता है । खान

साहेब के साथ सभी लोग काबे की ओर हाथ उठाकर

डुआ मांगते हैं]

[इस मिलन के दौरान में कप्तान इनायत खां शाहिदा को सप्रेम देखता है और शाहिदा भी कभी-कभी लजीली आंखें ऊपर उठाकर सस्नेह नेत्रों से कप्तान को निरखती है। दो-दो चार होते ही शाहिदा की निगाहें फौरन जमीन छू लेती हैं और हल्की मुस्कान चेहरे पर पर थिरकती है] बेगम ! तुम इतने दिनों नर्स का काम करती रहीं ? मुझे ताज्जुब है ।

जरीना:—

नर्स का काम नहीं बल्कि जल्लाद का काम अन्जाम देती आई हूं मैं । हमें मजबूरन यह जालिमाना काम अन्जाम देना होता था । हफ्तों भूखे रक्खा जाता था । लोहे की जलती सलाखें.....[जरीना की आवाज बन्द हो जाती है और वह फूट-फूट कर रोती है]

खुदा गारत करे उन बज्जात लुटेरों को जिन्होंने तुम्हारी गैरहाजिरी में मुझसे मेरे दुधमुंहे लखत जिगर को जुदा किया । जब मैंने उसे छीनने की जुरत की तो मुझे चार जल्लादों ने जबर्दस्ती एक लारी में डाल दिया । जब मैं तिसपर भी काबू में न आई तो मारते-मारते मुझे अधमरा कर दिया । मैं बेहोश हो गयी । जब होश में आयी तो मालुम हुआ कि मैं चीनियों के हाथ बिकी

हुई हूँ । चीनी इन्सानियत का खून कर रहे हैं । चीनी इन्सान हैं । ही नहीं वह है निरे हैवान । उन्हें इस दुनियां में रहने का कोई हक नहीं है । पता नहीं ! कब खुदा का कहर नाजिल होगा इन दरिन्दों पर । इनायत ऐसे मेरे सौ बच्चे होते तो मैं उन्हें भी मुल्क की हिफाजत के लिए जंग में आज ही भेज देती जो चीनियों का खून पी लेते । खाला जान ! कप्तान अकेले नहीं हैं । मैं उनके साथ मोर्चे पर जाऊँगी । आप मायूस न हों । हम चीनी हत्यारों को कत्लकर उनके खून की नदी बहायेंगे ।

शाहिदा:—

शमीमा:—

शाहिदा:—

बेटी ! यह कैसे मुमकिन होगा ? आज कल... अम्मां यह हर तरह से मुमकिन होगा । हमें झांसी की रानी बनना ही होगा । भारत माता की असमत बचानी ही होगी वरना... [कमांडिंग राय और लेफ्टीनेण्ट जंगीसिंह का प्रवेश] कमांडिंग कप्तान इनायत खां की चारपाई के पास लड़ा हो जाता है और सब का सलाम कबूल करता है]

कमांडिंग:—

कैप्टन इनायत खां ! मैं तुम्हें बधाई देता हूँ । तुम्हारी बहादुरी और दिलेरी के कारनामों के लिए हमारी भारत सरकार ने तुम्हें लेफ्टी-

नेष्ट कर्नल बनाया है । तुम्हारे ऐसे बेजोड़ बहादुर आफिसरों की बड़ी जरूरत है अपने मुल्क को । मैं तुम्हारे वालिद को यह खबर लिख भेजता हूँ । जिन्होंने ऐसा बहादुर लड़का हमारी फौज को दिया । तुम्हारे कारनामों में सुनहले अक्षरों में लिखे जायेंगे ।

इनायत खां:—कमार्डिंग साहेब । यही हैं हमारे अब्बाजान,  
(कप्तान) आप इनसे मिलिए ।

कमार्डिंग:— खान साहेब ! आप मेरी शुक्रिया कुबूल करें । आपके फरजन्द ने भारत माता की लुटती इज्जत बचाई है । ईश्वर करे वह दुश्मनों को पेकिंग तक खदेड़ने में कामयाब हो ।

इनायत खां:— यह हैं मेरी अम्मी जान ! जिन्होंने मुझे मौत  
(कप्तान) के मुंह से बचाया है ।

कर्नल:— क्यों नर्स ! क्या सममुच तुम कप्तान की मां हो ?

[जरीना कुछ जवाब नहीं देती]

नर्स:— बोलो ! हमारा कप्तान इनायत खां तुम्हारा बेटा है क्या ?

[जरीना अभी भी जवाब नहीं देती । किसी ऊँचे से ऊँचे विचार में मग्न है ]

नर्स:- मैं तुम्हीं से पूछ रहा हूँ नर्स ? जवाब दो ।  
 जरीना:- कर्मांडिंग साहेब ! “इनायत मेरा बेटा नहीं,  
 मेरा बेटा नहीं”, मैं अहद करती हूँ जब तक  
 मादरे वतन की इज्जत पर आंच आती रहेगी  
 तब तक इनायत मेरा बेटा नहीं, मेरा बेटा  
 नहीं! “वह है, बेटा हिन्द का” उसे भारत  
 माता की आनबान के लिए कुर्बानी भी करनी  
 पड़े तो मुझे फ़ख़्र ही हासिल होगा । कर्नल!  
 अब इनायत मेरा बेटा नहीं, वह है “बेटा  
 हिन्द का” कर्मांडिंग साहेब ?

कर्नल:- यह है “बेटा हिन्द का” । बेगम साहिबा आप  
 वीर माता हैं । आपका त्याग हमारी बहनों  
 और माताओं के लिए आदर्श है । आप वीर  
 जननी हैं । आप ऐसी माताओं की जरूरत  
 है हमारे प्यारे भारत को ।

जंगीसिंह:- बेगम जरीना जिन्दाबाद ।

सब:- जिन्दाबाद ।

इनायत खां:- भारत माता की जय ।

(कप्तान)

सब:- भारत माता की जय ।

पर्दा गिरता है ।

# राष्ट्रीय गान

जनगणमन - अधिनायक जय हे

भारत - भाग्यविधाता ।

पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा

द्राविड उत्कल वंग

विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा

उच्छल जलधितरंग

तव शुभ नामे जागे,

तव शुभ आशिष मांगे,

गाहे तव जय गाथा ।

जनगण मंगल दायक जय हे

भारत—भाग्यविधाता ।

जय हे, जय हे, जय हे,

जय जय जय, जय हे ॥